सुरभि

2018-19

बेटियों के सर्वांगीण विकास में अग्रसर

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

ये बेटियाँ

क्यों अच्छी लगती है, हमें धरती पर फूलों की खुशबू,
लहराती फसल और बहती नदियाँ ।
और पूजी जाती हैं जहाँ पर देवियाँ,
लेकिन क्यों अच्छी नहीं लगती हमें धरती पर बेटियाँ ।।
बोए जाते हैं बेटे और उग जाती है बेटियाँ,
सीचे जाते हैं बेटे और लहराती हैं बेटियाँ ।
पढ़ाया जाता है बेटों को और पढ़ जाती हैं बेटियाँ,
भविष्य के सुनहरे स्वप्न दिखाते हैं बेटे ।।
लेकिन जीवन का यथार्थ हैं बेटियाँ,
रूलाते हैं बेटे सहलाती हैं बेटियाँ ।
गिराते हैं बेटे और उठाती हैं बेटियाँ,
गर्व करते हैं बेटे के जन्म पर,
लेकिन गौरान्वित करती हैं बेटियाँ ।।
फिर भी जीवन तो है बेटों का,
और मारी जाती हैं बेटियाँ ।
दुनिया बदल गई, नहीं बदले हम,
कब पूजी जाएगीं बेटियाँ, इसका है गम ।।
जमाना बदल गया पर सोच वहीं पुरानी,
बेटे के मोह में अजन्मी रह जाती हैं बेटियाँ रानी।
बेकार नहीं जाएगी, अजन्मी पुकार की कुर्बानी,
आएगा समय जब राज करेगी बेटियाँ रानी ।।

उच्च शिक्षा म.प्र. की मंशानुसार एवं कार्यालय महिला थाना, सागर के निर्देशानुसार यह महाविद्यालय, परिसर में रेगिंग गतिविधि हटाने के लिए कृत संकल्प है। महाविद्यालयीन स्तर एवं छात्रावास स्तर पर प्राचार्य द्वारा एन्टी रैगिंग एवं मानव अधिकार समिति में निम्न प्राध्यापकों को नियुक्त किया गया –

प्रभारी – डॉ. रेखा बक्शी, प्राध्यापक एवं विभागध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग

सदस्य – डॉ. इला तिवारी, प्राध्यापक, वनस्पति शास्त्र

डॉ. अनुपमा यादव, सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र

डॉ. एस. के गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग

इसके उपरांत भी यदि किसी माध्यम से रेगिंग की सूचना मिलती है या निरीक्षण के दौरान पाई जाती है तो कमेटी द्वारा महाविद्यालय के प्राचार्य को तुरंत इस घटना की जानकारी दी जाएगी। तथा प्राचार्य द्वारा इस घटना की जाँच कराई जाएगी। घटना की निष्पक्ष जांच हेतु महाविद्यालय द्वारा दोषी छात्रा के विरूद्ध एफ. आई.आर. दर्ज कराई जाएगी, यह संस्था का दायित्व होगा । रेगिंग को परिचय के नाम पर छुपाने का प्रयास नहीं कराया जाएगा। रैगिंग से संबंधित सभी निर्देशों का कड़ाई से पालन किया जाएगा । रेगिंग के विरूद्ध किए जा रहे सभी उपायों का उद्देश्य समाज में चल रही कुसंगत एवं घृणित परम्परा को बंद करना है। यह शिक्षण संस्था, महाविद्यालय से रेगिंग पूर्णतः हटाने के लिए कृत संकल्पित है।

जिन्दगी में रंग भरती हैं बेटियाँ

कलियों से नाजुक होती हैं बेटियाँ,
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती हैं बेटियाँ।
रोशन करेगा बेटा एक ही कुल को,
दो – दो कुलों की शान होती हैं बेटियाँ ।
सूरज की रोशनी होती हैं बेटियाँ,
चंदा की चांदनी होती हैं बेटियाँ ।
खुशबू की रूह होती हैं बेटियाँ,
बेटे तो शादी के बाद अलग घर बसा लिया करते हैं ।
माँ – बाप के बुढ़ापे की लाठी होती हैं बेटियाँ ।

माँ

माँ मंदिर सी पवित्र तू ही ममता की छाँव है ।
तू श्वास मेरी धड़कन जीवन की गति है ।
तेरी निगाहों में बसी करुणा की लहरें सागर ।
की तेरे आँचल में बस अमृत की मिलती गागर ।
आशीष के तले ही मेरी सफलता है ।
गीले में सोई माँ तू सूखे मुझे सुलाया ।
तूने संभाला मुझको उंगली पकड़कर चलाया ।
वरदान सृष्टि की तू तीर्थ सा छाप है ।
नयनों की मेरी देवी पलकों पर आ बसो ।
ओझल करती हो न जाना मेरे दिल में आ बसो ।
माँ तू है मेरी जिंदगी सागर में नाव है तू ।
सपने अधूरे पूरे करूँगी मैं माँ,
मुस्कान हो लबों पर रोने नहीं दूँगी माँ ।
तेरी उपासना मेरी मुक्ति का धाम है माँ ।

कु. रोशनी बाल्मीकि
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

कविता

अपनी तो हो गई परीक्षा
पास फेल ईश्वर की इच्छा
हमने की थी खूब पढ़ाई
रात-रात भर चिटें बनाई
विद्यालय में कड़ा था पहरा
हमें लगा था धक्का गहरा
चिटें जेब में कूद रही थीं
खाली कॉपी गूँज रही थी
सूझ न पाया हम को कुछ भी
चार लकीरें झट से लिख दी
ईश्वर अल्ला तेरा नाम
टीचर को सन्मति दे भगवान
बण्डल पूरा गायब करके रद्दी में बेचे भगवान

रश्मि जैन
बी.कॉम. द्वितीय सेमेस्टर

माँ का चंद आभार

जब भी करती मेरी, सैलाब में आ जाती हैं ।
माँ दुआ करती हुई, ख्वाब में आ जाती हैं ।।
ये ऐसा कर्ज है कि जो, मैं अदा कर ही नहीं सकती ।
मैं जब तक घर न लौटूँ, मेरी माँ सज्दे में रहती हैं ।।
ये अंधेरे देख ले, मुँह तेरा काला हो गया ।
माँ ने आँखें खोली दो, घर में उजाला हो गया ।।
अभी मुझे पता है माँ मेरी, मुझे कुछ भी नहीं होने देगी ।
मैं घर से जब निकलती हूँ, दुआ भी साथ चलती है ।।
माँ के आगे यूं खुलकर नहीं रोना ।
जहाँ बुनियाद हो, इतनी नमी अच्छी नहीं होती है ।।

नेहा सोनी
बी.ए. छटवां सेमेस्टर

पुराने दिनों की तरह

कुछ प्रिय किताबें चली गई थी,
प्रिय दुष्ट मित्रों के साथ
जो लौटकर नहीं आई कभी भी,
परन्तु उनकी आत्माएँ,
न जाने कहाँ से ?
हवाओं में तैर कर आ गई हैं,
और कर रही हैं शिकायत मुझसे,
बचाओ हमें ।
इन रद्दीवाले
कबाड़ियों से,
और ले आओ वापिस,
पुराने दिनों की तरह,
अपनी अलमारियों में महकने के लिए ।

कु. रश्मि राजे
बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

बेटी का नसीब

ऐसा तूने नसीब क्यों बनाया
तूने नारी को पराया बनाया
उसे अपने अनुसार
जीने का हक भी नहीं दिया
ये भेदभाव तुमने उसमें किया
जब वह बाबुल के घर में होती है
तब वह वहाँ पराई होती है
जब वह ससुराल में होती है
तब भी वह वहाँ पराई होती है
अब आप ही बताईये
कि वह कहाँ अपनी होती है ।

कु. प्रियंका सेठ
बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

कविता

आज के जमाने में शब्दों के मायने बदल गये हैं ।
लोगों के सही चेहरे बताने वाले आईने बदल गये हैं,
नेता ने यदि कहा कि, गरीबों का चूल्हा बुझने नहीं देगा।
तो समझ लो पेट्रोलियम व गैस के दाम बढ़ रहे हैं ।
वीरों की शहादत का यदि बखान करें तो ।
समझ लो कि कफन चोरी के प्लान बन रहे हैं ।
शांति व अमन की बात करता है तो
समझ लो सीमा पर दुश्मन कदम धर रहे हैं ।
देश को सुखी व सम्पन्न होने की बात करता है तो
समझ लो देश को विदेशियों के हाथ रहन रख रहे हैं ।
खर्चों को कम करने की बात करें तो,
समझ लो करो के नीचे दफन हेतु जतन हो रहे हैं ।
और हिन्दी माथे की बिन्दी जैसा बखान करें तो
समझ लो पूरे खानदान सहित हिन्दी पर पैर रख
कर अंग्रेजी में दबंग हो रहे हैं ।

वन्दना मेहरा
बी.कॉम. चतुर्थ सेमेस्टर

माँ तुम्हारी बहुत याद आती है

सर्दी के मौसम में अधिकतर नींद अचानक खुल जाती है
हर दिन हर पल में है तू, ये वहम तोड़ जाती है,
किसी की उंगलियाँ मेरे बालों को सहलाती है,
मालूम पड़ता है कि पवन इस तरह लहराती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती हैं ।
हजारों मरीजों को देखती हूँ अस्पताल में
चिल्लाते, कराहते, दर्द से झटपटाते पर जब
शिशु अस्पताल में इंजेक्शन के डर से कोई बेटी
उछलके अपनी माँ की गोद में चली जाती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
यूं दूर रहने की आदत सी हो गई है
बाहरी खाना जीवन की शैली हो गई है
स्वाद जीभ को आता नहीं, ध्यान चीज पर जाता नहीं
रसहीन पकवानों से काया मैली हो गई है
जब कोई लड़की अपने घर का खाना मुझे चिढ़ा कर खाती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
कॉलेज से निकलती हूँ जब, देखती हूँ कि
स्कूल की घंटी पर छोटे-छोटे बच्चे एक दिशा में छूटे चले जाते हैं
जहाँ उनके इंतजार में खड़ा है कोई अपना
उनकी उंगली पकड़ कर आश्वस्त हो जाते हैं
उनके वात्सल्य पर लालायित होते-होते जब
नजर अपनी सूनी हथेली पर जाती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
दिर भर की थकावट के बाद शाम को
दोस्तों से मिल के राहत काफी मिल जाती है
परन्तु बात सोने की आती है तो
हॉस्टल के कढ़े सिरहाने पर जब देर तक नींद नहीं आती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
मेरे सारे प्रयासों में तुम्हारे स्पर्श की कमी नजर आती है ।
पर किसी रूप में मेरी परछांई मुझमें स्फूर्ति भर जाती है ।
जब कॉलेज के प्रोफेसर कभी बेटा करके बुलाते हैं
उनके चेहरे में तुम्हारी छवि नजर आती है
दिन के चौबीस घंटे, हर मिनिट, हर सेकेण्ड
जब घड़ी की सुई टक-टक करती जाती है
माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।

पूजा भुरहरि
बी.ए. छटवां सेमेस्टर

नवजात बिटिया के लिए बधाई - गीत

सदा ही तू मुस्काना
राह देखता तेरी बेटी,
जल्दी से तू आना
किलकारी से घर भर देना,
सदा ही तू मुस्काना
ना चाहूँ मैं धन और वैभव,
बस चाहूँ मैं तुझको
तू ही लक्ष्मी, तू ही शारदा,
मिल जाएगी मुझको
सारी दुनिया है एक गुलशन,
तू इसको महकाना
किलकारी से घर भर देना,
सदा ही तू मुस्काना
बन कर रहना तू गुड़िया सी,
थोड़ा सा इठलाना
ठुमक-ठुमक कर चलना घर में,
पैजनिया खनकाना
चेहरा देख के तू शीशे में,
कभी-कभी शरमाना
किलकारी से घर भर देना,
सदा ही तू मुस्काना
उँगली पकड़ कर चलना मेरी,
काँधे पर चढ़ जाना
आँचल में छुप जाना माँ के,
उसका दिल बहलाना
जनम-जनम से रही ये इच्छा,
बेटी तुझको पाना
किलकारी से घर भर देना,
सदा ही तू मुस्काना ।।

जिंदगी

जिंदगी अगर मुश्किल न होती तो
जीना मुमकिन न होता
जिंदगी पर अगर काँटे न होते तो
सँभलना मुमकिन न होता
जिंदगी में अगर दुःख की घड़ी न होती तो
सुख मुमकिन न होता
जिंदगी में अगर बुराईयाँ न होती तो
अच्छाईयों का आना मुमकिन न होता
जिंदगी का कोई उद्देश्य न होता
तो सफलता पाना मुमकिन न होता
जिंदगी की कोई आशा की किरण न मिलती तो
अंधकार हटाना मुमकिन न होता
जिंदगी में सूरज न होता तो
प्रकाश मिलना मुमकिन न होता
जिंदगी अगर ठोकर न मारती तो
गिरकर उठना मुमकिन न होता
प्रकाश मिलना मुमकिन न होता
जिंदगी अगर मुश्किल न होती तो
जीना मुमकिन न होता ।

रिचा जैन (शाह)
बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर

भ्रूण हत्या

एक बूँद गर्भ में समाई, माँ बनने का अहसास हुआ
सोचा गूँजेगी किलकारी, घर में खुशियों का त्यौहार हुआ
मातम सा छाया घर में, जब पता चला कि कन्या है
सिर्फ लिंग जानकर दुखी, क्या इतनी बदकिस्मत हूँ
दादी बोली हमें नहीं चाहिए, पिता की नहीं तमन्ना है ।
जिस नारी वंश से पिता तूने जन्म लिया
मैं उसी वंश की किलकारी हूँ ।
माँ, क्या तुम भी नहीं जानती हो ?
मैं मर जाऊँ इस जग में आने से पहले
मारेगा मुझे तिल-2 करके, मेरा अंग-2 वो काटेगा
मैं रोऊँ भी तो कैसे मुँह से आवाज नहीं आती
ये पाप-महापाप है माँ, मत बनो इसके भागी
मैं भगत सिंह, चंद्रशेखर जैसे बेटा बन सकती हूँ
मैं कल्पना, सानिया, मदर टेरेसा
बनकर तेरा नाम रोशन कर सकती हूँ
मैं कर सकती जो सब आज पुरुष करता है
फिर दहेज खर्च के डर से तुम मुझे मारना चाहते हो
बेटे की चाहत की खातिर, तुम बेटी की बलि चढ़ाते हो
मैं कली तुम्हारे आँगन की
मुझे आँगन में महकने दो
माँ रहम करो, पिता रहम करो
मुझे इस जग में आ जाने दो
मुझे फूल बनकर खिल जाने दो
मुझे इस जग में आ जाने दो

रक्षा जैन
बी.ए. छटवां सेमेस्टर

इसमें हमारी क्या है भूल

ऐसी खता हुई क्या बेटे
क्यों हमको दुत्कार किया ।
आखिर मात-पिता है तेरे
ये कैसा सत्कार किया ।
इतने लाड़ प्यार से हमने
तुमको पाला बड़ा किया ।
अच्छी शिक्षा भी दिलवायी,
और पाँवों पर खड़ा किया ।
बीबी की कान भराई ने
तुमको हमसे दूर किया ।
आखिर माता-पिता है तेरे
ये कैसा सत्कार किया ।
क्या भूल हो गई हमसे
जो हमको अपने से दूर किया ।
हलवा, पुरी तुम खाते थे
रूखी-सूखी ही दिया गया करो ।
आखिर मात-पिता है तेरे
ये कैसा सत्कार किया ।

भेद कर ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करती है, जिससे हममें धैर्य का प्रादुर्भाव होता है और धैर्य धारण करने से हमें संतोष प्राप्त होता है। सारे सुखों की जड़ संतोष में है यह भी हमें साहित्य से पता चलता है अत: संतोष धारण कर हम निर्मल आनंद को प्राप्त करते हैं जहां कहीं भी कोई भी ईर्ष्या या बदला लेने की भावना या नीचा दिखाने की भावना नहीं होती, होता है तो सिर्फ आनंद..... अपने जीवन के सुख का आनंद तथा दूसरों को सुखी करने का आनंद केवल आनंद.....। इस आनंद के बाद क्या मोक्ष के लिए कुछ करना बचा होता है ? नहीं। यह भी हमें साहित्य बताता है कि यही सच्चिदानंद की अवस्था ही मोक्ष अर्थात् अंत भला सो सब भला है। अंत में हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में साहित्य का अध्ययन सर्वाधिक प्रासंगिक है अत: क्यों न हम समय रहते जागें और साहित्य के माध्यम से धर्म व मोक्ष को प्राप्त करने की चेष्टा करते हुए, जीवन के चारों अंगों में सामंजस्य स्थापित कर पूर्ण मनुष्य होने का सुख प्राप्त करें।

माता तुम्हें पुकार रही

राजकुमार अहिरवार
सहा. प्राध्या. हिन्दी

उठो सुनो भारत के बेटो,माता तुम्हें पुकार रही।
दूध पिलाने के खातिर वह आँचल प्यार पसार रही।।
उस दूध में इतना बल होगा असीम शक्ति बन जाओगे।
बैरी युद्ध पछाड़ बीच नव विश्व-शक्ति बन जाओगे।
करो शक्ति का वरण खूब,माँ की चाहत यही रही।
उठो सुनो भारत के बेटो,माता तुम्हें पुकार रही।।

दूध नहीं वह अमृत है, नीरोग सदा हो जाओगे।
गाल गुलाबी अंग खिलाकर, दुनिया को दिखलाओगे।
ऐसे पुत्रों को पाने को जननी निशि-दिन तड़प रही।
उठो सुनो भारत के बेटो, माता तुम्हें पुकार रही।।

पियो दूध-माँ बदन पुष्ट भाल- विकास करो अपना
नाम जगत् माँ रोशन करना, जो उनका चिरकल्पित सपना।
समय-स्वप्न साकार हुए, इतिहास अनल है धधक रही
उठो सुनो भारत के बेटो, माता तुम्हें पुकार रही।।

नहीं किसी की कोई जरूरत, माँ- गोद सभी मिल जाता है।
रत्न-गोद पाने को मन मुंह हाथ चलाना पड़ता है।
हाड़-तोड़ मेहनत से माँ उर स्नेह-धार है निकल रही।
उठो सुनो भारत के बेटो, माता तुम्हें पुकार रही।।

सुधा -धार दुग्ध माता की, बहती महल, झोपड़ियों में।
धारा वही अमीरी बहती, बहती शुष्क खोपड़ियों में।
सिक्ताँचल माँ का बना रहे, इस हेतु पुत्र आगाह रही।
उठो सुनो भारत के बेटो, माता तुम्हें पुकार रही।।
दूध पिलाने के खातिर वह आँचल प्यार पसार रही।।

बेटियाँ

माता पिता की संपदा, भाई का विश्वास।
दोनों कुल जग मग करे, बेटी स्वयं प्रकाश।।

सजी धजी है लाड़ली, खिली खिली ज्यों धूप।
माँ देखती बेटी में, अपना ही प्रतिरूप।।

बेटी चिट्ठी लिख रही, सुखमय है संसार।
माता-पिता ने पा लिया, हर तीरथ का द्वार।।

बेटी घर की रोशनी, दोनों घर तक जाय।
अपने शील स्वभाव से, जग में यश फैलाय।।

राखी भेजें बेटियाँ, गूंथ कर उसमें प्यार।
भाई बहन की प्रीति का, ये अनुपम संसार।।

सोनल सोनी
बी.एच.एस-सी.IVसेम.

बेटी है कुल तारिणी, कब समझोगे आप।
बेटों से प्यारे लगे, उनको ये माँ-बाप।।

बेटों के हित होत है, रुपयों की बरसात।
घर-घर में है घट रहा, बेटी का अनुपात।।

पराया धन

लोग कहते हैं कि बेटियां पराया धन होती हैं, शायद यह सच भी है, परंतु इस बात को कोई झुठला नहीं सकता कि बेटों की अपेक्षा बेटियों का जीवन अधिक संघर्षमय है। पुराने जमाने में तो अक्सर बेटियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था। क्या वो सब सही था। नहीं बेटियों को मारने से उन्हें क्या मिलता था जबकि बेटों को लाड़-प्यार से पाला जाता था। आज के इस जमाने में लड़कियों की हत्या तो बंद हो गई, लेकिन आज भी शायद बेटियों से ज्यादा बेटों को महत्व दिया जाता है। बेटी ऐसा मत करो, वहां मत जाओ, उससे बातें मत करो, इत्यादि रोक टोक लगायी जाती है परंतु बेटों पर नहीं। बेटियों पर प्रतिबंध लगाना ठीक है, परंतु बेटों पर वो भी तो बेटियों जैसे ही हैं उन पर भी तो प्रतिबंध लगाइए। मैं इस लेख के माध्यम से बेटियों को महत्व व बेटों को नीचा दिखाने वाली बात नहीं कर रही हूं मैं तो बस इतना कहना चाहती हूं कि बेटी एक ओस की बूंद की तरह होती है। यदि किसी व्यवहार में बेटियों के प्रति थोड़ी सी भी कड़वाहट आ जाती है, तो बेटियां सहन नहीं कर पाती हैं। इसलिए बेटियों को भी बेटों की तरह कुछ प्रतिबंधों से मुक्ति, कुछ प्यार, कुछ सम्मान दिया जाए तो प्रत्येक बेटी आसमां की बुलंदी को छू सकती है।

फासले

लंबा फासला तय करना बाकी है,
मंजिले हैं बहुत पाना बाकी है।
रास्ते मिल गये तय करना बाकी है,
पल हैं कम मुहब्बत करना बाकी है।
रोशन है चांद मगर दागी है,
कोई करता इंतजार पुकारना बाकी है।
मिल गया पता ढूंढना बाकी है,
बाकी सफर संगी न कोई साथी है।
अनेक है रंग तस्वीर भरना बाकी है,
बहुत है दोस्त मिलना बाकी है।
जीवन है थोड़ा काम बाकी है,
अपनापन है देना अभी बाकी है।
देता वह बहुत लेना बाकी है,
नदियां हैं मगर प्यास प्यासी है।
बिखरे हैं मोती उठाना बाकी है,
मिली है जिंदगी जीना बाकी है,

नारी

इस धरा पर प्यार का सौगात है नारी।
कुछ गुदगुदे लम्हों की बरसात है नारी।

ये मेरी नहीं, उनकी नहीं, सबकी बात है।
हर लहलहाती जिंदगी का राज है नारी।

होती है छलनी नजरों से वो रोज ही नारी।
विषपान में तो कम से कम महाकाल है नारी।

चूल्हा फूंक कर देखो ऐ बस्ती फूंकने वालो।
घर-घर में अलादीन का चिराग है नारी।

क्या पूछते हो दोस्त मुझसे खूबियां उसकी।
इंसानियत का सबसे अच्छा नाम है नारी।

भरती है रंग जिंदगी के कोरे चित्र में
हर रूप में एक जादुई फनकार है नारी।

प्रियंका सेन
बी.काम. VI सेम

माँ की महिमा

माँ की महिमा क्या बतलाएं
माँ से तो ये संसार है।

गिनती न हो पाए जिनकी,
उतने मां के उपकार हैं।

बचपन से आज तक पाला,
परेशानियों में भी संभाला।

सदा प्रेरणा बनकर हमको,
विजयी होना सिखलाया।

हमें दिए स्वादिष्ट व्यंजन,
खुद ने रूखा-सूखा खाया।

ममता की मूरत हर मां को,
'संध्या' का बहुत प्रणाम है।

माँ से बढ़कर कोई नहीं है,
माँ तो बड़ी महान है।

संध्या ठाकुर
एम.ए. II सेम.

कन्या भ्रूण हत्या उन्मूलन

चाहो संख्या संतुलन, लड़का-लड़की बीच।
हत्या भ्रूण न हो सके, रेख लेव जा खींच।।
हत्या, हत्या एक सम, पुत्री हो या पुत्र।
हत्या भ्रूण न कीजिए ध्यान रहे सर्वत्र।।
हत्या कन्या भ्रूण की कैसऊं उचित न होय।
जो है जाको समर्थक, पापी कहिये सोय।।
कन्या देवी जगत की, वही विसारे जाहि।
अपने सभी सुकुर्म में, सदा पूजियत ताहि।।
कन्या भोजन धरम की रही प्रथम पहिचान।
जाको सब जानते भये, बने रहत अंजान।।
भ्रूण रूप कन्या रहे, वह भी उसी समान।
कन्या कन्या भेद नहिं, मानत चतुर सुजान।।
कन्या दोनों कुलन की, करती सार संभार।
वंश वृद्धि इक कुल करे, दूजे यश संचार।।
सीता, सावित्री-शिवा सब धरती की शान।
इनके कारण जगत में, मात पिता पहिचान।।
बेटा से बेटी भली, जा सो कुल पहिचान।
नेहरू की सुता, जानत सकल जहान।।
लालन, पालन पढ़न में तनक भेद न होय।
किसमें का प्रतिभा छिपी, जा जाने नहि कोय।।
बेटा से बेटी अधिक घर का राखत ध्यान।
रात दिवस चिंता रहत, राखत घर की शान।।
जब तक घर बेटी रहे, पिता फिकर कछु नाहिं।
सबका ध्यान राखत रहत, सब प्रसन्न मन माहि।।
घर के कारज काम में, सदा बराबर हाथ।
भेदभाव किंचित नहीं, सबको देवे साथ।।
वह ससुराले जायके, राखत पितु कुल लाज।
समय-समय पर आयके, करती है सब काज।।
सौ बातन की बात इक, सबको देय बताय।
कबहूं कन्या भ्रूण की, हत्या ना हो पाय।।

नीलू अग्निहोत्री
बी.ए. VI सेम.

मैं भारत की बेटी हूँ

गीता, गंगा, गायत्री, गौ महिमा को जिसने गाया।
मैं उस देश की बेटी हूँ, जिसमें भगवान को आना भाया।
मैं नहीं हूँ, कोई वह तितली, इधर-उधर जो मंडराये।
मेरा असली रूप देखकर, सारी दुनिया थर्राये।।
मैं दुर्गा बनकर महिषासुर के प्राण हरण कर सकती हूँ।
दानव दुष्टों के दलन हेतु, मैं रणचण्डी बन सकती हूँ।।
मैंने स्वयं प्रभु को भी नित, अपनी गोद खिलाया।
मैं उस देश की बेटी हूं, जिसमें भगवान को आना भाया।।

मैं अनन्त सागर की गहराई सहज नाप सकती हूँ।
और व्योम की असीम ऊंचाई को भी छू सकती हूँ।।
न कोई क्षेत्र अछूता है, जिसमें मेरी पहुँच नहीं।
कोई काम न ऐसा है,जिस को करने की सामर्थ्य नहीं।
मुझे असंभव को भी संभव करना सदा सुहाया।।
मैं उस देश की बेटी हूँ, जिसमें भगवान को आना भाया।
मैंने कितने दुर्दिन देखे साक्षी है इतिहास हमारा।
मेरे अपहरण को कितने रावण आये, इसको न कभी विचारा।।
रही परतन्त्र वंदनी अब तक, युग का युग है बीता।
फिर भी मैं निष्कलंक खड़ी हूँ, बनी आज की सीता।।
मैंने आन बान पर अपनी, जौहर करके दिखलाया।
मैं उस देश की बेटी हूँ जिसमें भगवान को आना भाया।।

गिरी गाज सी अंगरेजन पर, वह झाँसी की रानी।
जिसके असीम, साहस पौरुष की, जग में अमर कहानी।।
झलकारी की झलक देख,अंग्रेज बहुत घबड़ाये।
समझा लक्ष्मीबाई रूप में, मौत खड़ी मुँह बाये।।
जिनकी गौरव गाथा सुनकर, सारा जग चकराया।
मैं उस देश की बेटी हूँ जिसमें भगवान को आना भाया।।

मेरे विचार

खुशियाँ मिलती माँगने पर,
मंजिल मिलती राह चलने पर,
भरोसा रखना खुद पर और उस रब पर,
सब कुछ देता है वो सही वक्त आने पर।
कैसे होते हैं, हर पल मुस्कुराने वाले,
राज होते नहीं बताने वाले
कभी तन्हाइयों में आकर दिखाएंगे,
कैसे होते हैं सबको हंसाने वाले।
जिंदगी हसीन है जिंदगी से प्यार करो,
है रात तो सुबह का इंतजार करो
वो पल भी आयेंगे जिसका इंतजार है आपको,
रब पर भरोसा और वक्त पे एतवार करो।
वक्त से लड़ कर जो अपना नसीब बदल दे,
इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दे।

शिवानी चौरसिया
बी.एस.सी. II सेम.

"बेटी का उद्गम"

आसमां में एक तारा टूटा
रोया जमीं पर आकर वो
कोई अपना मिला न साथी उसको
कुछ अनजाने से लोग मिले
कोई दोस्त न उसका बन पाया
अकेला भटक रहा था वह दुनिया में
कुछ सपने अपने साथ में लेकर
ढूंढ रहा था मंजिल को।
सोच रहा था आसमां में
कोई जगह बची होगी मुझको।
पहुंचा जब वह आसमान में,
रूठा हुआ सा चेहरा लेकर
लौट आया फिर धरती पर
कहने लगा धरती से फिर वो
अब दिखा रास्ता तू ही मुझको
धरती माँ ने उस तारे को
अपनी बेटी बना के अपना लिया
इस संसार के निर्माण का
कार्य उसे ही सौंप दिया।

स्वाति राज
बी.एस.सी. II सेम.

"मां के आंचल की ठंडी छांव"

एक नौजवान लड़के ने एक बड़ी कंपनी में मैनेजर की पोस्ट के लिए आवेदन किया। नौजवान ने प्रवेश प्रक्रिया से जुड़े पड़ाव पारकर लिए, सिर्फ इंटरव्यू ही बचा था। कंपनी का डायरेक्टर भी उस युवक की शैक्षणिक योग्यता से काफी प्रभावित हुआ। डायरेक्टर ने पूछ,-"क्या कभी तुम्हें छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है?" नौजवान ने कहा नहीं सर मेरी पढ़ाई का सारा खर्च मेरी मां ने उठाया क्योंकि जब मैं एक वर्ष का था, तब मेरे पिता का देहांत हो गया था। अब डायरेक्टर का सवाल था, तुम्हारी मां क्या काम करती हैं।' नौजवान ने बताया मेरी मां दूसरों के कपड़े धोकर मेरी पढ़ाई और घर दोनों का खर्च चलाती हैं। डायरेक्टर ने नौजवान से अपने हाथ दिखाने को कहा। उसके हाथ साफ और कोमल थे। हाथों की नरमी देखने के बाद डायरेक्टर बोला,'क्या तुमने कभी अपनी मां की सहायता की है? नौजवान ने कहा 'मां ने कभी पढ़ाई के अलावा मुझे कोई दूसरा काम करने ही नहीं दिया।' डायरेक्टर ने ध्यान से नौजवान की बातें सुनी और कहा, 'आज तुम घर जाओ और अपनी मां की मदद करो।' तुम्हारे इंटरव्यू की प्रक्रिया कल सुबह करेंगे।' नौजवान घर की ओर चल दिया। घर पहुंचकर सबसे पहले अपनी मां के हाथों को देखना चाहा मां के हाथों को देखते ही उसकी आंखें नम हो गईं। मां के हाथ रूखे और कटे-फटे थे। आज पहली बार नौजवान को एहसास हुआ कि पढ़ाई मां की मेहनत की बदौलत ही पूरी हुई है। मां के हाथों ने ही उसकी नींव को सींचा और उसे इतना काबिल बनाया है। इसके बाद नौजवान ने सारे कपड़े धोये जो आज तक सिर्फ मां धोती थी। मां और बेटे ने वह पूरी रात बातों में गुजार दी।

अगली सुबह नौजवान फिर इंटरव्यू के लिए गया। डायरेक्टर नौजवान को देखते ही उसकी आंखों में छिपे आंसुओं को पहचान गए। उन्होंने पूछा कल तुमने क्या किया और क्या सीखा? नौजवान ने जबाव दिया, "मैंने मां के हाथों को देखा, जिनके दम पर मैं यहां हूं और मां का सारा काम भी किया लेकिन मैंने कल तीन बातें और सीखीं

पहली- मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि अपनी मां के बिना मैं कभी बुलंदियों को नहीं छू पाता और न ही यहां तक पहुंचता।

दूसरी -: मैंने जाना कि साथ मिलकर कैसे काम किया जाता है।

तीसरी -: एक महत्वपूर्ण बात, मैंने परिवार और रिश्तों की कीमत को जाना।

यह सुनने के बाद डायरेक्टर के चेहरे पर तसल्ली भरी मुस्कान थी और वे बोले मुझे अपनी कंपनी के लिए तुम्हारे जैसे नौजवान की आवश्यकता है।

प्रिया जैन

बी.काम.VI सेम.

The Nature And Significance of Woman And Womanhood

Dr. Nisha Indra Guru
Associate Prof. (Eng.)
Govt. Girl's P.G. College, Sagar (M.P.)

Woman is the organization of real, ideal, genuine and universal powers hidden in the life of the nature, therefore, the idea of a woman and the definition of a woman must begin with an understanding of basic creative situation inherent in the nature and the universe. This leads us to the consideration of the fact that power situated in strength, courage, sincerity, committment is the fundamental basis of presenting a meaning of the woman. We can understand this fact by looking at how the wind blows and how does it wipe out whatever comes enroute. It does so primarily because it excludes the external determinants and concentrates its full resources by reconstructing articles, contents and elements within it. It means that it gathers strength from the functioning of all the structures which are constantly universalized. In the same way woman precedes from the workings of the elements, contents and structures which are internal to herself, therefore, every formation that is within her are awakened as if an ideal is becoming truth, or truth is becoming an ideal. This particular meaning of woman remains one of the key factors in making her symbolical of energy, strength, power and the like. The wisdom of the world, though accepts this, doesnot grant any recognition to this fact. The world always looks down upon woman as meek and submissive while the real authority of rule and prestige have been assigned to the male species. The history of the civilization records the fact that growth and prosperity of life in any form have always relied upon the woman. Whenever, in history of progress of civilization, there has been any swapping of this role, the results were not only suicidal and disastrus but led to the extinction of human civilizations. Man grows on prejudices, therefore, generally succeptible to errors and abstractions. Woman on the other hand workout the concepts through a fair assessment of equality and opportunity, hence, she is believed to be away from consequences of prejudices when the conditions are optimum and equal man would resort to war and violence while woman would conceive and construct a space for love and affection. The question is not which is better and what is suitable to sustain the foundations of the life, rather it is the continuity of the basic virtues of life that is perhaps the most important idea.

Even Tagore, in one of his essays on woman has made an analysis of the fact that the basic leanings of man and woman are almost entirely different and accordingly they assume their character and disposition. Man is prone to violence and rage, hence, his eyes are always fixed on immediate, local, short-lived and temporary benefits that actions and events in the life intend. While, woman, looks for stability and permanence. The basis of this fact lies in the abscence and prescence of creative and generic principle. Man himself is not the creator but only an instrument in the business of creation.

Woman is an expressive form of creativity, in that she obtains a method, always in a position to change this method into an idea. This difference leads to a serious question of jealousy and rivalry and since the times immemorial man has tried to dominate and hold the anthority just because primary strength of creativity was not on his side. It was the grand genesis of elements and the first principles that brought woman as in carnate divinity. Even on the religious grounds female divinity is fairly larger than the male divinity, hence, the point is proved that feminine form is significant, not only because it foresees the creation of life form of this universe but also because it is closer to the earthly version of divine principle. The other side of this problem is that there is no common concern towards reconciliation and repproachment, man would remain man and woman would continue to be distinguished on account of her gentle, mild and temperate perceptions. The historical data in this regard overlooks and ignores the fact that in the times of crisis and near rain woman faired forward to save the present version of life on this earth. To illustrate this point one must take a recourse to the life of Sati, Savitri and Seeta. In each, the truth was embodied in the form of an ideal, hence, they could subsumed themselves into universal models. Consequently they re-wrote the history of time. It is pertinent, therefore, to be generous while making any estimate of woman in the world. And only thing needs to be done in this regards is to assign a rightful and legitimate place to the role played by feminine race in the making of this life form.

"माता–पिता और गुरु चरणों में"

मात-पिता और गुरू चरणों में प्रणाम बारम्बार।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार।।

1. माता ने जो कष्ट उठाया,
   यह ऋण कभी न जाय चुकाय।
   ऊंगली पकड़कर चलना सिखाया,
   ममता की दी शीतल काया।।
   जिनकी गोद में पलकर हम कहलाते हैं होशियार .....।।
   हम पर किया बड़ा .....।।

2. पिता ने हमको योग्य बनाया,
   कमा कमाकर अन्न खिलाया।
   पढ़ा लिखा गुणवान बनाया,
   जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का बना दिया हकदार.....।।
   हम पर किया बड़ा .....।।

3. तत्व ज्ञान गुरू ने दर्शाया,
   अंधकार को दूर हटाया।
   हृदय में शिक्षा दीप जलाकर,
   आगे बढ़ने का मार्ग बताया।।
   बिना स्वार्थ ही किया करें, ये तीनों बड़े उद्धार .....।।
   हम पर किया बड़ा .....।।
   मात-पिता और गुरू चरणों में .....।।
   हम पर किया बड़ा उपकार .....।।
   ये मेरी मौलिक रचना है।

अपूर्वी जैन
B.Com II Sem.

तुम सबसे अच्छे हो पापा !

जब छोटी थी तो सोचती थी
पापा तुम जादूगर हो
हर समस्या का हल है।
तुम्हारी बंद मुट्ठी में
जब बड़ी हुई तो जाना
उलझे हो हर वक्त तुम
मेरी समस्या सुलझाने में
जब छोटी थी तो सोचती थी
पापा ने दुनिया देखी है।
जब बड़ी हुई तो जाना
मैं पापा की हम बेटियों
पापा की दुनिया है
जब छोटी थी तो सोचती थी
पापा की जेब में तारे हैं।
जब बड़ी हुई तो जाना
मैं और मेरी बहने पापा की
आँखों का तारा है।
जब छोटी थी तो सोचती थी
तुम सबसे अच्छे पापा हो
जब बड़ी हुई तो जाना
पापा तुम सबसे अच्छे हो
अब मैं बड़ी हो गई पापा
जान गई हूँ जीवन को
उतना आसान नहीं है यह
जैसा बचपन में लगता है।
पर अब भी
हर मुश्किल का हल
बंद है तुम्हारी मुट्ठी में
पापा अब भी तुम जादूगर हो।
तुम सबसे अच्छे हो पापा।
सारे संसार से अच्छे हो पापा।

रोशनी अहिरवार
B.Com. II Sem.

बेटियाँ

जब जब जन्म लेती हैं बेटी
खुशियाँ साथ लाती हैं बेटी
ईश्वर की सौगात हैं बेटी
सुबह की पहली किरण हैं बेटी
तारों की शीतल छाया हैं बेटी
आंगन की चिड़िया हैं बेटी
त्याग व समर्पण सिखाती हैं बेटी
नये रिश्ते बनाती हैं बेटी
जिस घर जाए, उजाला लाती हैं बेटी
बार-बार याद आती हैं बेटी
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिसके पास नहीं हैं बेटी
गुलशन का रूह गुल का सितारा हैं बेटियाँ
फुरसत मिले तो जरा इन्हें पढ़ भी लीजिए
गीता, पुराण, बाईबिल, कुरान हैं बेटियाँ
बेटे तो अपने माता-पिता को छोड़ देते हैं अकेले
लेकिन बेटियाँ माता-पिता की लाठिया और सहारा हैं
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को
दोनों कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ
कोई नहीं है दोस्तों एक दूसरे से कम
हीरा अगर हैं बेटा तो मोती हैं बेटियाँ

प्रिया जैन
B.Sc. VI Sem. (PCM)

कविताएँ

''काँप उठी, धरती माता की कोख''
कलयुग में अपराध का
बढ़ा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख,
समय-समय पर प्रकृति
देती रही कोई न कोई चोट
लालच में इतना अंधा हुआ
मानव को नहीं रहा कोई खौफ
कहीं बाढ़, कहीं पर सूखा
कभी महामारी का प्रकोप
यदा कदा धरती हिलती
फिर भूकम्प से मरते बे मौत,
मंदिर मस्जिद और गुरूद्वारे
चढ़ गए भेंट राजनीतिक के लोभ
वन सम्पदा, नदी, पहाड़, झरने
इनको हरा रहा इंसान हर रोज,
सबको अपनी चाह लगी है
नहीं रहा प्रकृति का अब शौक
''धर्म'' करे जब बाते जनमानस की
दुनिया बालों को लगता है जोक,
कलयुग में अपराध का
बढ़ा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख।।

माँ

माँ,
हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ .....
कभी डाँटती है हमें, तो कभी गले लगा लेती है माँ .....
हमारी आँखों के आँसू, अपनी आँखों में समा लेती है माँ .....
अपने होठों की हँसी हम पर लुटा देती है माँ .....
हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ .....
जब भी कभी ठोकर लगे, तो हमें तुरंत याद आती है माँ .....
दुनिया की तपिश में, हमें आँचल की शीतल छाया देती है माँ .....
खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ .....
प्यार भरे हाथों से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ .....
बात जब भी हो एजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ .....
रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ .....
लब्जों में जिसे बयाँ नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ .....
भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते है, ऐसी होती है माँ .....।।

फूल

हमें तो जब भी कोई फूल नजर आया है,
उसके रूप की कशिश ने हमें लुभाया है,
जो तारीफ ना करे कुदरती करिश्मों की
क्यों हमने फिर मानव का जन्म पाया है।।

अंजली कोरी
B.Com. II Sem.

स्वच्छता अभियान

स्वेच्छा जैन
B.Com. II Sem.

मैं नहीं तू, तू नहीं मैं
सदा ही करते, तू तू मैं मैं
करो कभी कोई अच्छा काम
बढ़ाये जो, भारत देश का नाम
देश की धरोहर पर है, सबका अधिकार
फिर क्यूं है इसकी सफाई से इनकार
नहीं है कोई बहुत बड़ा उपकार
बस करना है जीवन में बदलाव
शहर को मानकर घर अपना
निर्मल स्वच्छ हैं, उसे भी रखना
कूड़ेदान में फेंको कूड़ा
थूकने को नहीं है धरती मैया,
बदलो अपनी आदत भैया
न करो किसी पड़ौसी का इंतजार
देश है, सबका, बढ़ाओ स्वच्छता अभियान
"मेरा शहर साफ हो
इसमें हम सब का हाथ हो"
स्वच्छता में ईश्वर बसा होता है।

जिन्दगी

"जिन्दगी" बदलने के लिए लड़ना पड़ता है .....
और आसान करने के लिऐ समझना पड़ता है .....
"वक्त" आपका है, चाहो तो सोना बना लो .....
और चाहो तो रोने में गुजार दो .....।
अगर कुछ अलग करना है तो भीड़ से हटकर चलो।
भीड़ साहस तो देती है पर पहचान छीन लेती है,
मंजिल न मिले तब तक हिम्मत मत हारो
और न ही ठहरो ..... क्योंकि
पहाड़ से निकलने वाली नदियों ने आज तक
रास्ते में किसी से नहीं पूछा ..... कि
समुन्दर कितना दूर है।

"रिश्ते"

वो "रिश्ते" बड़े ही प्यारे होते हैं।
जिनमें न हक हो न ही शक हो
न अपना हो न पराया हो
न दूर हो न पास हो .....
न जात हो न पात हो .....
सिर्फ अपने-पन का अहसास हो।

स्वेच्छा जैन
B.Com. II Sem.

बेटियाँ

सबकी शान होती हैं बेटियाँ
सभी का अभिमान होती हैं बेटियाँ
जाने लोग क्यों बेटियों को अभिश्राप समझते हैं
ये तो बहुत दयावान होती है बेटियाँ
घर की जान देश का मान रखती हैं बेटियाँ
सब कुछ सहकर चुप रहती हैं बेटियाँ
न जाने इतनी सहनशील कैसे होती हैं बेटियाँ
कल को संवारती हैं बेटियाँ
दो परिवार को संवारती हैं बेटियाँ
पर न जाने कुछ लोग बेटियों को क्यों नहीं संभालते
फूल बनकर मुस्कुराती हैं बेटियाँ
मुस्कुराकर गम भुलाती हैं बेटियाँ
जीतकर कोई खुश हुआ तो क्या हुआ
हार कर भी खुशियाँ मनाती हैं बेटियाँ

शबनम बानो
M.A. IV Sem.

नारी तुम पर नाज है

"जन्म तुम्हें जो देती है।
क्यों जिन्दा उसी को जलाते हो, ।।2।।
चूड़ी पहनती है औरत पर तुम क्यों
खनखनाते हो, ।।2।।
मत समझो उसे पैर की जोती
वह तो सिर का ताज है। ।।2।।
आने वाला समय कहेगा,
नारी तुम पर नाज है।
नारी तुम पर नाज है,
नारी तुम पर नाज है।"
"नारी-नारी क्यों कहते हो,
नारी जग की शान है। ।।2।।
नारी से पैसा हुए
राम कृष्ण भगवान है।" ।।2।।

रागिनी पटैल
B.Com. II Sem.

माँ

माँ ईश्वर की सूरत है
माँ ममता की मूरत है
माँ शांति का प्रतीक है
माँ स्पष्ट और सटीक है
माँ से बढ़कर कोई नहीं
माँ सा दुनिया में कोई नहीं
जिस घर ने माँ को पूजा है
वह स्वर्ग धरती परइजा है
माँ एक सरल पहेली है
क्योंकि होती सबकी सहेली है
माँ को नहीं देना कोई भी दुख
माँ देती हमेशा सबको सुख
माँ को न पाप सो जान
है दुनिया से भी वह अंजान
माँ होती सबकी पहली गुरू
उससे है दुनिया सब की शुरू
चोट मुझे लगे तो दर्द उसे होता है
मेरी हर परीक्षा उसकी अपनी होती है
माँ दुनिया से सामना करने की शक्ति देती है
जो साया बनकर हर कदम पर मेरा साथ देती है
वास्तव में माँ का कोई विस्तार नहीं
मेरे लिए माँ से बढ़कर कुछ भी नहीं।

पूजा साहू
M.A. IV Sem.

कोशिश कर

कोशिश कर हल निकलेगा।
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन से तीर सा सध,
मरूस्थल से भी जल निकलेगा
मेहनत कर पौधों को पानी दे।।
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे।
फौलाद का भी पल निकलेगा।
जिन्दा रख दिल में उम्मीदों को।
गरल का समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कल गुजरने की।
जो है आज थमा-थमा सा चल निकलेगा।।

प्रीति रजक
B.Com. IV Sem.

"गुरु की महिमा"

गुरू को सारे जग में, सबसे ऊपर है माना,
गुरू की महिमा मुश्किल है, कागज में लिख पाना।
ज्ञान का दीप जलाकर जो, जीने की राह दिखाते,
उनका आशीष पाकर हम, अपनी मंजिल पाते
माली बनकर सीजते, जो ज्ञान का जमन,
उन गुरूओं को मेरा सौ-सौ बार नमन
हम अपने गुरूओं का, कैसे कर्ज चुकायेंगे,
ज्ञान की यह रोशनी सारे, जग में हम कैसे जायेंगे।

पूजा साहू
M.A. IV Sem.

माँ

घुटनों से रेंगते-रेंगते कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाव में जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका, दूध-मलाई आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह प्यार ये तेरा कैसा है।
सीधा-साधा, भोला-भाला, मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा "माँ" मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

सौम्या सेतिया
B.Sc. IV Sem.

"स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत"

स्वच्छ रहे ये देश हमारा।
स्वस्थ रहे ये देश हमारा।।
1. तन से भी और मन से भी,
भारत में स्वच्छता आयेगी।
लोगों की जिम्मेदारी ही,
भारत को स्वस्थ बनायेगी।।
2. स्वास्थ हमारा ही धन है,
वहीं हमारी पूँजी है।
देश को स्वच्छ बनाने की,
सबसे बड़ी चुनौती है।।
3. धर्म यही है कर्म यही है,
देश को स्वच्छ बनाना है।
देश को स्वच्छ बनाकर ही स्वस्थ रखना है,
भारत को सोने की चिड़िया का पद वापिस दिलवाना है।।

स्वाति दुबे
B.Sc. VI Sem.

मेरे पापा

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा।
चलते चलते थक गई कंधे पर बिठा लो न पापा
अंधेरे से डर लगता है
सीने से लगा लो न पापा।
मम्मी तो सो गई
आप ही थपकी देकर सुला दो न पापा।
स्कूल तो पूरी हो गई
अब कालेज जाने दो न पापा।
पाल पोसकर बड़ा किया
अब जुदा तो मत करो न पापा।
अब डोली में बिठा ही दिया है
आँसू तो मत बहाओ न पापा।
आप की मुस्कुराहट अच्छी है
एक बार मुस्कुराओ न पापा।
आपने मेरी हर बात मानी
एक बात और मान जाओ न पापा।
इस धरती पर बोझ नहीं मैं
दुनिया को समझाओ न पापा।

साक्षी सेतिया, B.Sc. II Sem.

है माँ .....

हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ .....
कभी डाँटती है, हमें, तो कभी गले लगा लेती है, माँ .....
हमारी आँखों के आँसू, अपनी आँखों में समा लेती है माँ .....
अपने होठों की हँसी, हम पर लुटा देती है माँ .....
हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ .....
जब भी कभी ठोकर लगे, तो हमें तुरंत याद आती है माँ .....
दुनिया की तपिस में हमें आँचल की शीतल छाया देती है, माँ .....
खुद चाहे किसी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ ...
प्यार भरे हाथों से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ .....
बात जब भी हो लजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ .....
रिश्तों की खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ .....
लब्जों में जिसे बयाँ नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ .....
और भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं।
यह मेरी मौलिक रचना है।

राजेश्वरी पटैल
B.Com. II Sem.

श्रद्धा ठाकुर
M.Sc. (Zoology)
IV Sem.

कर्म युग

ये युग है कर्म प्रधान
श्रम से मंजिल पाना है
धैर्य लगन व साहस से
तुम्हें आगे बढ़ते जाना है
मत आँको खुद को कम करके
तुमको परचम लहराना है
तुम क्या हो क्या कर सकते हो
दुनिया को दिखलाना है।
विश्व रखो तुम अपने पर
तुम जो चाहो कर सकते हो।
हर सपने को तुम
अपने श्रम से पूरा कर सकते हो।

कंचन विश्वकर्मा
M.Sc. IV Sem. Botany

सीखना है तो यह सीखो

बोल सको तो मीठा बोलो,
कटु बोलना मत सीखो।
बता सको तो राह बताओ,
पथ भटकाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ,
दिल जलाना मत सीखो।
लगा सको तो बाग लगाओ,
आग लगाना मत सीखो।
कमा सको तो पुण्य कमाओ,
पाप कमाना मत सीखो।
छोड़ सको तो पाप छोड़,
चरित्र छोड़ना मत सीखो।
पा सको तो प्यार पाओ,
तिरस्कार पाना मत सीखो।
रख सको तो विद्या रखो,
बुराई को रखना मत सीखो।
पोंछ सको तो आंसू पोंछो,
दिल को दुखाना मत सीखो।
हँसा सको तो सबको हँसाओ,
किसी पे हँसना मत सीखो।
बना सको तो मित्र बनाओ,
शत्रु बनाना मत सीखो।

बेटियाँ

कोई चेहरा है कोपल काली का रूप
कोई रूप सलोनी परी का इन से सीखो सबक जिन्दगी का
बेटियाँ तो हो लम्हा खुशी का
ये अगर हो तो रोशन जहाँ है
ये जमीने और आसमां है।
है, वजूद इनसे आदमी का बेटियाँ
तो लम्हा खुशी।
बेटियाँ तो हैं, लम्हा खुशी का।
चिड़ियों से हो आगन की रोनक
''चिड़ियों का चहँचहाना अच्छा लगता है। - (2)
चिड़ियों का झुंड प्यारा लगता है
चिड़ियों का वृक्षों पर बैठना अच्छा लगता है।
चिड़ियों का चहँचहाना अच्छा लगता है।
चिड़ियों का रोज आगन में आना अच्छा लगता है।
चिड़ियों का घोंसला प्यारा लगता है।
चिड़ियों का तो हर लम्हा प्यारा लगता है।

किरण दुबे
B.A. VI Sem.

गाँव के हालात

''निर्मल सा व्यवहार कहाँ मानव बता दे वो गाँव कहाँ।''
सीधा सरल था व्यवहार जहाँ मानव बता दे वो गाँव कहाँ।
गाँवों की निर्मल हवा है, कहाँ मानव बता दे वो गाँव कहाँ।
गंगा सी वो नदियाँ कहाँ मानव बता दे गाँव कहाँ है।
शहरों के हैं झुंड हर जगह मानव बता दे गाँव कहाँ।

चुनाव के नारे

''दादा, दादी भूल न जाना वोट डालने जरूर जाना।''
''अबकी चोट करारी है, वोट डालने की बारी है।''
''उठो जागो चलो जब तक वोट न डाल दो तब तक।''
''लोकतंत्र का यही है, आधार वोट डालना सबका अधिकार।''

माँ की ममता

माँ होती है दुनिया में सबसे प्यारी।
जिसकी ममता को सलाम करती है, जनता सारी।।
इस जहाँ में है, आँचल तेरा सबसे अच्छा।
जिसके सहारे निकला मेरा बचपन सारा।।
उस बचपन की सारी यादे आती है मुझको।
जिस गोद में बैठकर चाहा मुझे आपको।।
माँ मैं फिर जीना चाहता हूँ।
तुम्हारा प्यारा बच्चा बनकर।।
माँ मैं फिर सोना चाहता हूँ।
तुम्हारी प्यारी लोरी सुनकर।।
माँ मैं फिर अपनी भूख मिटाना-चाहता हूँ।
तुम्हारी हाथों से रोटी खाकर।
हमारी आँखों के आँसू, अपनी आँखों में समा लेती है, माँ।
जिसकी ममता को सलाम करती है, जनता सारी।।
जब माँ हो जाती अलग अपने बच्चे से।
तो वह बच्चा रोता है अपनी बदकिस्मती से।।
यू तो इस जहाँ में होगे लाखो चाहने वाले मुझे।
पर कोई आप जैसा ना होगा प्यार करने वाला।
जिनकी हर डांट भी लगती थी मुझको प्यारी।
उस माँ को सलाम करती, जनता सारी।।
मेरी माँ है इस दुनिया में सबसे अच्छी और सच्ची।
कोई कुछ गलत ना कहना, वरना मैं हो जाऊगा सबसे कही।।
वो माँ के साथ हाथ पकड़कर, बाजार जाना।
और फिर किसी सामान के जहाँ पर हट कर जाना।।
फिर माँ का मनाना और कहना मेरा बेटा I am so sorry
पर फिर भी बच्चा ना माना, तो कर देती है उसकी पी को पूरी।।
यू तो मिलता नहीं माँ का प्यार सभी को।
पर जिसको माँ मिलती है, तो करो उनका सम्मान।।
माँ की महिमा है दुनिया में सबसे निराली।
इसलिए तो करती है सलाम उनको ये जनता सारी।।

मेघा भल्ला
B.Sc. VI Sem.

"जिन्दगी"

कभी हंसाती, तो कभी रूलाती है जिंदगी
हर रोज नया कुछ, सिखाती है जिंदगी
कभी गम, तो कभी खुशी देती है जिंदगी
ऊपर वाले की दी, एक सौगात है जिंदगी .....
कभी दोस्तो से भरी होती है तो,
कभी तन्हाईयाँ दिखाती हैं,
कभी असफल कर सीख दिलाती हैं जिंदगी .....
कुछ कर गुजरने का सबक सिखाती हैं, तो
अपनों का प्यार स्नेह दिलाती हैं जिंदगी .....
कभी किताबों के पन्नों में रह कर कभी रूठ जाती हैं,
तो कभी बातों में, मुलाकातों में, यादों में, घुल-मिल
जाती हैं जिंदगी .....
मंजिलों को पाना सिखाती है जिंदगी .....
अच्छे-बुरे पल दिखाती हैं जिंदगी .....
इतिहास के पन्नों को याद करो तुम आज .....
क्या-क्या नहीं दिखाती हैं जिंदगी .....
सुनो तुम आज मेरी इस बात को,
एक बार हीं आती हैं जिंदगी .....
कुछ अच्छा करो तुम, असफलता को छोड़
सफलता की ओर बढ़ो तुम, यह बताती हैं जिंदगी .....
दीपक के नीचे हमेशा अंधेरा रहता है,
तो उसकी "ज्योति" से उजाला होता है,
ये सीख दिलाती हैं जिंदगी .....
मेरी इस बात को याद रखना यारो,
"अजीब-फलसफा दिखती है जिंदगी"
"अजीब-फलसफा दिखाती हैं जिंदगी"

ज्योति शर्मा
M.Sc. (Zoology) II Sem.

बेटी

प्यार भरा एक गीत है। बेटी
जीवन का संगीत है। बेटी.....
बेटी जैसे शीतल बयार
बेटी जैसे रिमझिम फुहार
जो महकाए घर का आँगन
बेटी है
वो खिली बहार एक सुहाना
मौसम जैसे ऐसे मन का
गीत है। बेटी.....
बेटी काजल, बेटी कंगन।
बेटी मंदिर, बेटी अँगना
बेटी से संसार है। अपना
बेटी से ही हर एक सपना
सात रंगों का इन्द्रधनुश
जीवन भर की प्रीत है बेटी
बेटा लक्ष्मी, बेटी सीता
बेटी कुरान बेटी गीता, बेटी है। एक गौरवगाथा
बेटी है। तो सब जग जीता
संस्कारों की डोर बंधी है
जैसे पावन रीत है। बेटी .....

अनु लिटोरिया
B.Com., II Sem.

बेटा बेटी एक समान, फिर क्यों होता बेटी का अपमान

किंजल परेता

जिस कोख से जन्मता बेटा,
उसी कोख से जन्मे बेटी,
बेटा हो तो बजे बधाई,
बहते आँसू आती बेटी ।
भेदभाव क्यों होते हैं यह,
कोख एक, पर न होती समता,
होती क्यों कन्या की हत्या,
देख बिलखती व्याकुल ममता ।
रक्त एक है, अंश एक है,
दोनों में ममता का सागर,
भय रहता है । दिल के अंदर,
फिर क्यों दिखता इतना अंतर ।
बहते हैं, कानून गजट में,
पालित हो वह कभी न दिखते,
गली-गली भ्रूण हत्या करते,
देखे जाते डॉक्टर बिकते ।
मुँह खोले दानव दहेज का,
हुए भ्रूण हत्या का कारण,
चीख-चीख कर कन्या कहती,
निर्दयता क्यों करते धारण ।
जो न कर पाता है बेटा, वह कर दिखाती हैं बेटियाँ ।

"अक्सर मैं सोचा करती हूँ"

कविता -
काश वह दिन वापस आ जाये
जब मैं नन्ही सी गुड़ियाँ थी,
लड़की क्या आफत की पुड़ियाँ थी,
जब मैं खेल सकती थी, किसी भी लड़के के साथ
जब मैं जा सकती थी, किसी के भी साथ
चाहे जिसे मुँह चिढ़ा सकती थी
कभी रोती तो कभी खिलखिलाती थी,
तो कभी माँ के आँचल में छिप जाती थी।।
मगर अब -
मैं किसी लड़के से बात नहीं कर सकती
मैं कहीं जा नहीं सकती।
मैं खुलकर खिलखिला नहीं सकती
माँ के आँचल में छुपना तो दूर अब मैं उसके
आगे आँसू भी नहीं बहा सकती।।
क्योंकि -
मैं बड़ी हो गई हूँ।
मगर मैंने कभी नहीं चाही थी ये बंदिशें
मैंने तो कभी नहीं चाहा था बड़ा होना
मैंने तो नहीं माँगी थी बड़ों की ये फरेबी दुनियाँ
मैं तो आज भी फुदकना चाहती हूँ, खिलखिलाना चाहती हूँ
किसी का मुँह बनाना चाहती हूँ।
काश! ये मुमकिन होता।।
"अक्सर मैं सोचा करती हूँ।"

समीक्षा जैन
B.Sc. II Sem.

माँ! तेरी बहुत याद आती है।

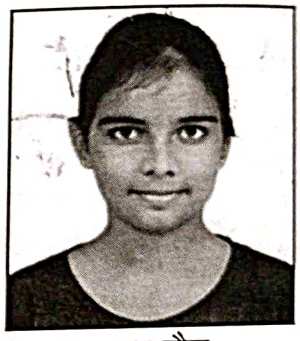

अब तू ही लता माँ, अब जिऊँ तो जिऊँ कैसे ?
किससे लूँ में बालाएँ और अब किससे मैं प्यार करूँ ?
अब किससे मैं अपने दिल की सारी बातें बयाँ करूँ ?
और किसकी खुशी के लिए मैं अपना जहाँ निसार करूँ ?
कौन है यहाँ जो तेरी तरह मेरे दर्द को जान पाएँ।
माँ तुझको एक बार देखने को मेरी जान जाएँ।।
हर वक्त माँ तेरी याद मेरे साथ रहती है।
कब आ पाऊँगी घर, माँ आपकी बिटियाँ बार-बार
यह खुद से कहती है।
हर लम्हा तेरे पास जाने के लिए हर दिन, मैं सपने बोती हूँ।
फिर! शाम को थक हार कर रात को "रोकर" सोती हूँ।।
माँ अब तो 'हर दिन' एक पल में 100 बार याद आता है।
"मैं" क्यों यहाँ आ गई पढ़ने, दिल ये बार-बार चिल्लाता है।
यहाँ हर खुशी तेरे बिना उदास लगती है।
मैं यहाँ हूँ फिर भी तू पास लगती हैं।।
आज भी माँ तुझको एक बार देखने को मेरी आँखें तरसती है।
फिर! याद आती है तो ये आँखें दिन में 100 बार बरसती हैं।
हो सकें तो ये जिन्दगी मुझे फिर से छोटा बना देना।
फिर से उनके हाथ की गर्म-गर्म रोटियाँ खाकर,उनकी गोद में सुला देना।।
पर ऐसा हो न सकेंगा, अब ये दिल सुकून से जाने कब सो सकेंगा।।
अब हर दिन के बाद वहीं रात आती है।
जब सब सोते हैं और तेरी याद मुझे रूलाती है।

मधु जैन
B.Sc. II Sem. (Computer)

मेरी कोई जायदाद नहीं

तन्हा बैठा था एक दिन मैं अपने
मकान में चिड़िया बना रही थी घोसला
रोशनदान में पल भर में आती पर भर में जाती थीं वो
छोटे-छोटे तिनके चोच में भर लाती थी वो.....
बना रही थी अपना घर एक न्यारा कोई
तिनका था ईट उसकी, कोई था गारा
कड़ी मेहनत से घर जब उसका बन गया
आए खुशी के आसू और सीना तन गया
कुछ दिन बाद मौसम बदला और हवा के झोके आने लगे .....
नन्हे से प्यारे-प्यारे दो बच्चे घोसले में चहचहाने लगे .....
पाल-पोसकर कर रही थी चिड़िया बड़ा उन्हें .....
पंख निकल रहे थे दोनों के पैरों पर करती थी खड़ा उन्हें .....
इच्छुक है हर इंसान कोई जमीन कोई आसमान के लिए,
कोशिश थी जारी उन दोनों की एक ऊँची उड़ान के लिए
देखता था मैं हर रोज उन्हें जज्बात मेरे उनसे कुछ जुड़ गया
पंख निकलने पर दोनों बच्चे माँ को छोड़ अकेला उड़ गए .....
चिड़िया, से पूछा मैने तेरे बच्चे मुझे अकेला क्यों छोड़ गए,
तू तो थी माँ उनकी फिर ये रिश्ता क्यों तोड़ गए .....
इंसान के बच्चे अपने माँ बाप का घर नहीं छोड़ते,
जब तक मिले न हिस्सा अपना रिश्ता नहीं तोड़ते .....
चिड़िया बोली परिन्दे और इंसान के बच्चे में यही तो फर्क है,
आज वो इंसान का बच्चा मोह माया के दरिया में गड़ गया है
इंसान का बच्चा पैदा होते ही हर राह पर अपना हक जमाता है,
न मिलने पर वो माँ बाप को कोर्ट कचहरी तक ले जाता है
मैने बच्चो को जन्म दिया पर करता कोई मुझे याद नही
मेरे बच्चे क्यों रहेंगे साथ मेरे क्योंकि मेरी कोई जायदाद नहीं .....

लड़कियाँ चिड़ियाँ सी होती हैं

लड़कियाँ चिड़ियाँ सी होती हैं
पर पंख नहीं होते लड़कियों का मायका भी होता है
ससुराल भी होता है
पर घर नहीं होता लड़कियों का माँ बाप कहते हैं
ये बेटियाँ तो पराई है और ससुराल वाले कहते हैं
ये तो दूसरे घर से आयी है
हे भगवान अब तू ही बता
ये बेटियाँ किस घर के लिए बनायी है .....

सुविचार

जिन्दगी काँटों से भरी है
हौसले इनकी पहचान है
रास्ते पर तो सभी चलते हैं
जो खुद रास्ता बनाए वही इंसान है

कंचन लोधी
B.Com. II Sem.

पिता

मेरा साहस मेरी इज्जत मेरा सम्मान है पिता।
मेरी ताकत मेरी पूँजी मेरी पहचान हैं पिता।।
घर की ईक-ईक ईंट में शामिल उनका खून-पसीना।
सारे घर की रौनक उनसे, सारे घर की शान पिता।।
मेरी इज्जत, मेरी शोहरत, मेरा रूतबा, मेरा भाव हैं पिता।
मुझको हिम्मत देने वाले मेरा अभिमान हैं पिता।।
सारे रिश्ते उनके दम से, सारे नाते उनसे हैं।
सारे घर की दिल की धड़कन सारे घर की जान पिता।।
शायद रब ने देकर भेजा फल ये अच्छे कर्मों का।
उसकी रहमत उसकी सौहरत उसका है वरदान पिता।।

अंकिता पटैरिया

नारी

नारी तुम प्रेम हो,
आस्था हो, विश्वास हो
टूटी हुई उम्मीदों की
एकमात्र आस हो,
हर जान का तुम्हीं,
तो आधार हो
नफरत की दुनियाँ में
मात्र तुम्ही प्यार हो,
उठो अपने अस्तित्व को सम्भालो,
केवल एक दिन ही नहीं,
हर दिन नारी दिवस बनालो .....

अंकिता पटैरिया

शिक्षक

माँ-बाप से भी ऊँचा मान होता है।
भारत में शिक्षकों का सम्मान होता है।
प्यार से डाँट से या कभी इनकार से,
शिष्यों के लिए शिक्षक वरदान होता है।
मिट्टी को हीरा सा कोहिनूर बनाना,
नींव के ईटों में योगदान होता है।
ज्ञान का भंडार इनके चरणों में यारों,
रोम-रोम इनसे प्रकाशमान होता है।
जीवन अंश 'मानस' चरणों में है अर्पण,
आँख खोल देता, क्रपानिधान होता है।
भारत में शिक्षकों का .....।।

देखिये .....

हर एक हद से गुजर गयी माँ
बच्चे के लिए बाजार में उतर गयी माँ
माँ के पसीने ने घर में महकाए गुलाब
अपने अरमान खुद ही कुतर गयी माँ
जब से बहु आई है वह चुप ही रहती है
औलादों का कहना है सुधर गयी माँ
बहु-बेटे ने किया था जानलेवा हमला
जब पुलिस आई तब मुकर गयी माँ
अब केवल यादों में नजर आयेगी तेरी दुनिया
छोड़ कर ऊपर गयी माँ !

अंकिता पटैरिया

मैं बोझ नहीं हूँ!

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा,
चलते-चलते थक गई कंधे पर बिठा लो न पापा,
अंधेरे से डर लगता सीने से लगा लो न पापा,
माँ तो सो गई .....
आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा।
स्कूल तो पूरी हो गई,
अब कॉलेज ज़ाने दो न पापा।
पाल पोस कर बड़ा किया,
अब जुदा तो मत करो न पापा।
अब डोली में बिठा ही दिया तो,
आँसू तो मत बहाओ न पापा।
आप की मुस्कुराहट अच्छी लगती है,
एक बार मुस्कुराओ न पापा।
आप ने मेरी हर बात मानी,
एक बात और मान जाओ न पापा।
इस धरती पर मैं बोझ नहीं,
दुनियाँ को समझाओ न पापा।

The Meaning of Teacher is

T	-	Truthful
E	-	Educator
A	-	Admisable
C	-	Credential
H	-	Honourable
E	-	Encourages
R	-	Rutilant

Samriddhi Saini
B.Sc. IV Sem.

"रब की अरदास बेटियाँ"

प्यारे से उस लम्हे को, मुश्किल से तराशा होगा,
कहीं बैठकर फुरसत में रब ने, बेटी को बनाया होगा।
वो पायल की छन-छन से,
लोरी कोई गाती है,
पक नाजुक सा फूल है, वो जो,
सारे घर को महकाती है।
फूल सी प्यारी बेटी ने,
घर आँगन को सजाया होगा
कहीं बैठकर फुरसत से रब ने ..... (1)

ना जाने क्यों लोगों ने,
ऐसी रीत बनायी है,
आज नहीं तो कल को बेटी,
उनके लिये परायी है।
नादान है, वो लोग जो,
खुद को सभ्य कहते हैं,
फूल सी नाजुक बेटी को
आज पराया कहते हैं।
वो किस्मत वाले होंगे जिन्होंने
बेटी रत्न को पाया होगा,
कहीं बैठकर फुरसत में रब ने ..... (2)

बांध दिया उस बन्धन में जो,
ले जायेगा दूर कहीं,
उस अनजाने बन्धन में भी,
प्यार मिले ये जरूरी तो नहीं।
बचपन से पाला जिसने,
उन्हीं से रिश्ता अजीब होता है,
एक दिन दूर चली जाती है,
क्या यही बेटियों का नसीब होता है।
दिल पे पत्थर रखकर उसने
अजनबी सा रिश्ता अपनाया होगा
कहीं बैठकर फुरसत में रब ने ..... (3)

न फर्क करो बेटा-बेटी में,
बेटी को भी पढ़ने दो,
सपनों के वो पंख लगाकर
खुले गगन ने उड़ने दो।
बस एक जरा सा मौका तो दो,
वो भी कुछ कर दिख लायेगी,
बेटी होना पाप नहीं है,
शान से फिर वो कह पायेगी।
हाल सुनाकर उस बेटी का
दिल भी तो भर आया होगा,
कही बैठकर फुरसत में रब ने
बेटी को बनाया होगा।

यह मेरी स्वयं की रचना है।

रूपाली अहिरवार
B.Com. IV Sem.

"गुरु आन से बड़े होते है,

गुरू शान से बड़े होते हैं।
गुरू की महिमा पहचान कर देखो
गुरू भगवान से बड़े होते हैं।"
"मुश्किलों में भाग जाना
आसान होता है,
पर पहलु जिंदगी का
इम्तिहान होता है,
डरने वाले को
कुछ नहीं मिलता जिंदगी में,
और लड़ने वालों के
कदमों में जहाँ होता है।"

स्वच्छता गान

मन की सफाई जरूरी है, तन की सफाई जरूरी है
मन की सफाई जरूरी है, तन की सफाई जरूरी है।
घर की सफाई से पहले, गलियों की सफाई जरूरी है।
साफ सफाई वाले ही जीवन में खुशियाँ पाते,
सारी दुनिया को अपने जीवन का राज बताते।
धरती की सफाई से पहले अम्बर की सफाई जरूरी है,
घर की सफाई से पहले, गलियों की सफाई जरूरी है।
तन्दुरूस्ती की पहली सीढ़ी सफाई रखना,
साफ सफाई वाले ने ही मीठा फल चखना
स्कूल की सफाई से पहले,
पुस्तक की सफाई जरूरी है।

आयुशी जैन
B.Sc. II Sem.

माँ तू महान है

माँ तू महान है प्रेम का प्रमाण है,
माँ तू अवतार है प्रेम का भंडार है।
माँ तू शक्ति है प्रेम ही तेरी भक्ति है,
माँ तू काली है प्रेम की तू रखवाली है।
माँ तू महान है प्रेम का प्रमाण है,
माँ तू दयालू है प्रेम तेरा चिरकाली है।
माँ तू पवित्र है प्रेम तेरा विचित्र है,
माँ तू गंगा है प्रेम तेरा बहुरंगा है।
माँ तू महान है प्रेम का प्रमाण है,
माँ तू दुःख मिटाती है प्रेम तेरा पुजारी है।
माँ तू कमल है प्रेम तेरा गंगाजल है,
माँ तू अनंत है प्रेम तेरा भगवंत है।
माँ तू महान है प्रेम का प्रमाण है
माँ तू ज्वाला है प्रेम तेरा निराला है,
माँ तू कितनी सुंदर है प्रेम तेरे दिल के अंदर है
माँ तू सत्य है प्रेम तेरा भक्त है
माँ तू महान है प्रेम का प्रमाण है।

लीलावती काछी
B.Com. II Sem.

शिक्षक की शिक्षा

माताएँ देती नव जीवन
पिता सुरक्षा करते।
पिता सुरक्षा करते
शिक्षक हमें बतलाते हैं।
सत्य-न्याय के पथ पर चलना,
शिक्षक हमें बतलाते हैं।
जीवन संघर्ष से लड़ना,
शिक्षक हमें सिखलाते हैं।
ज्ञानदीप की ज्योति जलाकर,
मन अलौकिक करते हैं।
विद्या का धन देकर शिक्षक,
जीवन सुख से भरते हैं।
शिक्षक ईश्वर से बढ़कर है,
यह कबीर बतलाते हैं।
क्योंकि शिक्षक ही भक्तों को,
ईश्वर तक पहुँचाते हैं।
जीवन में कुछ पाना है तो,
शिक्षक का सम्मान करो।
शीश झुकाकर श्रद्धा से तुम,.
प्रतिदिन उन्हें प्रणाम करो।

रितु विश्वकर्मा
B.Sc. II Sem.

नोटबंदी

भारत के 500 और 1000 रूपये के नोटों का बंद होना केवल काले धन पर नियंत्रण ही नहीं बल्कि जाली नोटों से छुटकारा पाना भी था। नोटबंदी 8 नवंबर 2016 को हुई। नोटबंदी के कई फायदे भी हैं, कई नुकसान तथा कई ऐसी समस्याएँ भी हैं, जो आर्थिक समाज में देखने को मिलती हैं। नोटबंदी पर विद्यार्थियों, शिक्षक, शिक्षिकाओं आदि अनेक जनता ने नोटबंदी पर निबंध लिखे। नोटबंदी के फायदे और नुकसान अर्थशास्त्रियों को हुए (1) कालाधन बाहर आएगा, नकली नोट में लगाम लगेगा, नोटबंदी से दिक्कत कुछ दिनों की है फायदे लंबे हैं 15 नवम्बर 2016 को नोटबंदी का व्यापक असर इस वक्त बैंकों और जनता पर पड़ रहा है।

1. शेयर बाजार में घटे रिटर्न :- 8 नवम्बर के बाद से दुनिया-भर के बाजारों के मुकाबले घरेलू बाजार में बड़ी गिरावट देखने को मिली है। इस दौरान निवेशकों के लाखों, करोड़ों रूपये डूबे हैं। सरकार के इस फैसले से आपकी छोटी बचत भी अछूती नहीं रहेगी। बैंकों और पोस्ट ऑफिसों के पास कैश बढ़ता जा रहा। ऐसे में आपकी स्मॉल सेविंग्स पर इंटरेस्ट रेट में जल्द कटौती देखने को मिल सकती है।
2. मकान की कीमतों में आई गिरावट :- 8 नवम्बर को 500-1000 रूपए के नोट बंद होने के फैसले के बाद आपके मकान की कीमत में कमी आ गई है। रियल एस्टेट को जानकार कहते हैं कि आगे प्रॉपर्टी की कीमतों में और गिरावट आने की उम्मीद है।

22 नवम्बर 2016 को भारत सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक की सलाह पर जारी भारतीय रूपया है।
विमुद्रीकरण एक आर्थिक गतिविधि है जिसमें सरकार पुरानी मुद्रा को समाप्त कर नई मुद्रा चालू करती है।
विमुद्रीकरण दो बार हुआ। पहली बार जनवरी 1978 में 1000, 5000, 10000 का विमुद्रीकरण हुआ दूसरी बार 8 नवम्बर 2015 को 500 और 1000 के नोटों को उसी रात 12 बजे बंद किए जाने की घोषणा की। सिक्के बंद हुए 1 पैसे, 2 पैसे, 5 पैसे, 10 पैसे, 20 पैसे और 25 पैसे मूल्यवर्ग के सिक्के 30 जून 2011 से संचलन से वापिस लिये गये अतः वे वैध मुद्रा नहीं हैं। वर्तमान में, भारत में 10 रू., 20 रू., 50 रू., 100 रू., 500 और 1000 रू. के नोट बंद कर दिये गये हैं। 500 रू. का पुराना नोट बंद होकर नया आया है।

मीना सोनी
B.Com. II Sem.

महिला उद्यमियों के लिए स्थायी व्यापार मॉडल के रूप में सौर ऊर्जा संयंत्र पर व्यवहारिक कार्यशाला

सागर दिनांक 28 मार्च 2022 शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर के भौतिक शास्त्र विभाग द्वारा Hands on Workshop on Solar Power Plant As sustainable Business Model For Women Emterpreneur पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. जी. एस रोहित, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा विभाग, सागर विशिष्ट अतिथि डॉ. नीरज दुबे विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी उच्च शिक्षा विभाग सागर, वित्तीय सलाहकार दीपक नीखरा एस.वी.आई सहायक जरनल मैनेजर सागर, तकनीकी विशेषज्ञ इंजीनियर महेन्द्र अहिरवार, इंजीनियर गोविंद अहिरवार, मयंक चौकसे, राहुल यादव, स्टार्टअप इनक्यूबेटर डॉ. दीपक सिंह, इनलंसर इंजीनियर एस.आर.सिंह आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. इला तिवारी ने की तथा कार्यशाला की संयोजक डॉ. दीपा खटीक रहीं। कार्यक्रम की शुरूआत माँ सरस्वती जी की पूजन से की गई इसके पश्चात अतिथि का स्वागत पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह दे कर किया गया कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्य डॉ. दीपा खटीक द्वारा प्रस्तुत की गई। डॉ. सुभाष हर्डीकर द्वारा सोलर पॉवर प्लांट ऊर्जा को विद्युत का बहुत अच्छा विकल्प बताते हुए सोलर ऊर्जा को एक बहुत अच्छा महत्वपूर्ण संसाधन बताते हुए छात्राओं को जागरूकता प्रदान करी तथा स्वरोजगार की ओर अग्रेसित किया। डॉ. जी.एस.रोहित सर बडा अच्छा विषय कहते हुए सभी को शुभकामाएँ दीं। ऊर्जा संकट के विषय में चर्चा करते हुए सोलर ऊर्जा को बहुत अच्छा स्रोत कहा। हमारा प्रदेश इस ओर जागरूक है। सौर ऊर्जा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर सकें बड़े आराम से बिजली प्राप्त हो जाती है तो अभी उसकी उपयोगिता नहीं हैं परन्तु आने वाले समय में यह बहुत उपयोगी होगा। दूर-दराज के गांवो में बिजली की जरूरत को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए तथा महिलाओं को होने वाली समस्याओं के बारे में बताया। डॉ. नीरज दुबे ने ग्रामीण महिलाओं को होने वाली समस्याओं को बताते हुए कहा कि जब हमें बिजली की आवश्यकता होती है तब बिजली नहीं मिलती तब बिजली की निर्भरता खत्म होती है। सोलर ऊर्जा बहुत ही उपयोगी साबित होगी विद्यार्थी स्वयं ही रोजगार देने वाला बने। कच्चे माल से बच्चे सोलर सेल का निर्माण कर आत्मनिर्भर बनें। सोलर की माँग के साथ ही उसके रोजगार के लिए व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। सभी क्षेत्रों से श्रेष्ठ सोलर सेल को बताया। सोलर पावर प्लांट की उपयोगिता जागरूकता तथा रोजगार के बारे में अच्छा विषय बताया। प्राचार्य डॉ. इला तिवारी ने कार्यशाला के सफल आयोजन के लिये शुभकामनाएँ दीं तथा इसी कार्यशाला को इनक्यूबेशन सेंटर बनाने के लिए अतिरिक्त संचालक सागर से मौखिक स्वीकृति ली ।

मंच संचालन एवं आभार प्रदर्शन कार्यशाला संयोजक डॉ. दीपा खटीक ने किया। इस कार्यशाला में डॉ. रेनूबाला शर्मा, डॉ. नवीन गिडियन, डॉ. अंजना नेमा, डॉ. अंशु सोनी, डॉ. प्रतिमा खरे, डॉ. शक्ति जैन, डॉ. रजनी दुबे, डॉ. रश्मि दुबे, डॉ. मोनिका हर्डीकर, डॉ. संजय खरे, श्री दिनेश पाण्डेय सहित भौतिक शास्त्र विभाग के समस्त सदस्य एवं अत्यधिक संख्या में छात्राएँ उपस्थित रहीं ।

दीपा खटीक
कार्यशाला संयोजक

स्त्री विमर्श ''ममता कालिया के संदर्भ में''

ममता कालिया के उपन्यास और लघु उपन्यास नारी जीवन और उसकी स्वतंत्रता व समस्याओं पर आधारित है। समय की दृष्टि से इनके उपन्यास सामंतकालीन समाज और स्वाधीनता प्राप्ति के वाद के आधुनिक जीवन को चित्रित करते हैं।

ममता कालिया का लेखन भारतीय नारी के आस-पास घूमता है। वे संस्कारवद्ध और रूढ़िवादिता से संबंधित नारी की मानसिकता में घुटते हुए प्रश्नों को उठाकर यथार्थता के धरातल पर प्रस्तुत करती हैं। पारिवारिक जीवन-परिधि के अलावा व्यापक सामाजिक संदर्भों को भी महत्व देती है। आधुनिक और पुरातन मानवीय मूल्यों के बीच सामंजस्य स्थापित कर नारी की प्रगतिशील दृष्टि को विकसित करना, लेखिका का उद्देश्य रहा है। ये ऐसे चरित्रों का निर्माण करती हैं जो सहजता से भुलाये नहीं जा सकते। ममता कालिया नारी होकर नारी की समस्याओं को वास्तविक धरातल पर साहस के साथ प्रस्तुत करती हैं जहाँ नारी का अपना भी जीवन है, उसकी कुछ आवश्यकताएँ हैं।

ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में प्रेम, अंतर्जातीय विवाह, आर्थिक समस्याओं, बेरोजगारी, अवैध संबंध, दाम्पत्य विखराव, प्रगतिशील जीवन में स्थापित होने हेतु संघर्षरत पात्रों के चरित्रों को उभारा है। संवेदनशील नारी कथाकार ममता कालिया के उपन्यासों में अधिकांशतः त्रासदी है जिसमें नारी जीवन की व्यथा के अनेक स्तर खुलते हैं, उन उपन्यासों में रोमानी भावुकता के साथ मोहकता और खिंचाव हमेशा देखने को मिलता है। गृहस्थ जीवन के बीच पति-पत्नी संबंधों और कुँआरोपन की धारणा जैसे तथ्य को लेकर उपन्यास को गति प्रदान करती है।

ममता कालिया नारी मन के अंधेरे गवाक्षों में उतरकर एक भोक्ता की दृष्टि से तटस्थता के साथ उन आंतरिक भावों को चित्रित करती है जो नारी के व्यक्तित्व को सम्पूर्ण बनाता है। नारी जीवन के व्यापक अनुभव ममता कालिया की रचना के आधार हैं जिसका केन्द्र बिन्दु नारी है। समाज की मान्यताओं और संस्कारों के बीच समझौतावादी नारी की दोनों मनः स्थितियों का चित्रण इनके उपन्यासों में देखने को मिलता है। नारी एक ओर अपनी सुरक्षा के लिए समाज की संकीर्ण मनोवृत्ति को स्वीकार करती है, वहीं दूसरी ओर अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिए आत्म निर्वासन को महत्व देती है। इस प्रकार वह पूरे परिवेश पर अपना प्रभाव छोड़ती है किन्तु नारी समाज से अलग नहीं होती।

ममता कालिया की नारी का विरोध पुरूष से नहीं बल्कि पुरूष के अहं भाव से है। ममता कालिया के नारी विमर्श को वलवंत कौर के शब्दों में समझा जा सकता है कि ''नारीवाद एक स्वस्थ दृष्टिकोण है जो एकांगी नहीं, यह पुरूषों को नहीं उनकी मानवीयता घटाने वाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार है, जो मर्दानगी के नाम पर गढ़ा गया है। जिसके पीछे झूठी अहमन्यता और उत्पीड़क प्रवृत्ति के अलावा कुछ नहीं।''

ममता कालिया एक उन्मुक्त यथार्थ तेज लेकर आती हैं, किन्तु इनकी उनमुक्तता और तेजमिजाजी की पहचान यौन-प्रसंगों में अधिक देखी जा सकती है। इन्होंने सेक्स से उपजी मनोग्रन्थियों पर कई ऐसे प्रश्नों को पूरी बेवाकी से उठाया है जिसे इससे पहले किसी ने नहीं लिखा था। इसी श्रेणी में इका 'बेघर' उपन्यास ऐसी ही

रचना है। जिसमें ममता कालिया ने महिला लेखिकाओं के स्त्री-पुरूष संबंधों के चित्रण के सीमित दायरे से बाहर नहीं आ पाने के आरोप को 'बेघर' के माध्यम से झूठा सिद्ध कर दिया है। हिन्दी उपन्यास के अब तक चले आ रहे स्वरूप को 'बेषर' उपन्यास तोड़ता है। हिन्दी में 'बेघर' प्रथम उपन्यास है जो कौमार्य के मिथक की पुरूष समाज में व्याप्त रूढ़ धारणाओं पर प्रश्नचिन्ह लगाकर पुरूष मानसिकता पर गहरी चोट करता है, इस 'वेधर' उपन्यास में यौन शुचिता के नाम पर नारी के साथ जो दोगला व्यवहार होता है, उसका ममता कालिया ने पुरजोर विरोध किया है कि ''वस्तुतः स्त्री के कुँआरेपन को लेकर पुरूष समाज में जो रूढ़ धारणाएँ हैं वे न सिर्फ अवैज्ञानिक हैं बल्कि अमानवीय भी हैं।''

'बेघर' उपन्यास में पृष्ठ-पृष्ठ पर स्त्री-विमर्श है किन्तु इसकी केन्द्रीय समस्या मर्द की अंधविश्वासी प्रवृत्ति, कुँआरेपन को लेकर मर्द की परम्परागत सोच, उसकी विकृत यौन मानसिकता है। इस उपन्यास का नायक परमजीत संजीवनी से कहता है ''मैं वीकली नहीं लाइक और प्लेवाय पढ़ता हूँ।'' ''परमजीत संजीवने में प्लेबाय की न्यूड मॉडल तलाशता रहता है।'' परमजीत का शुरू से ही उद्देश्य केवल नारी देह पर विजय हासिल करना है और कुछ नहीं, किन्तु जब उसे अन्तरंग क्षणों में लगता है कि वह पहला नहीं तो वह संजीवनी को छोड़कर गाँव की एक लड़की से अपने माता-पिता की इच्छा से विवाह कर लेता है किन्तु वह कभी संतुष्ट नहीं हो पाता और हार्टफेल होने के कारण मर जाता है।

आज हमारे आधुनिक कहे जाने पर भी नारियों को कई ऐसे पुरूष मिथकों से उपजी समस्याओं को सहना पड़ रहा है, भले ही स्त्री की इसमें कोई गलती ना हो। पुरूष मनोविज्ञान के अनुसार आज भी में नारी को देह की शुचिता के मिथक से मुक्ति नहीं मिल पाई है ''पवित्रता की लंबी-चौड़ी बातों के बावजूद आम तौर पर विवाह और यौन के संबंध में लोगों के विचार सड़े हुए हैं। सारे संसार में कभी-कभी मर्द ने नारी के संबंध में शुचिता, शुद्धता, पवित्रता के बड़े लम्बे-चौड़े आदर्श बनाये हैं घूम-फिरकर इन आदर्शों का संबंध नारी शरीर तक सिमट जाता है।''

कौमार्य के मिथक के साथ-साथ बलात्कार जैसी घृणित नारी समस्या को भी ममता कालिया ने अपने 'बेघर' उपन्यास में लिया है। 'बेघर' उपन्यास की संजीवनी दो बार बलात्कार का शिकार होती है, एक बार उसका दोस्त जो उसके साथ कालेज में पढ़ता था। वह अचानक ही उसके साथ बलात्कार करता है और दूसरी बार उसका प्रेमी परमजीत उससे जबरदस्ती करता है और दोनों ही उसे स्वीकार नहीं करते। एक को वह ठंडी लड़की लगती है तो दूसरा उसे यौन शुचिता के मापदंड से देखता है। संजीवनी भी अपने आप को अपराधी मानती है और बिना किसी प्रतिशोध के उनसे अलग हो जाती है किन्तु 'नरक-दर-नरक' की ऊषा बदनामी के डर से नारी पर होते अत्याचार को चुपचाप सहने को तैयार नहीं है।

'नरक-दर-नरक' उपन्यास की ऊषा स्वतंत्र व खुले विचारों की लड़की है जो आत्मनिर्भर होकर नारी स्वाभिमान की रक्षा करना चाहती है। इस उपन्यास में मुख्यतः प्रेम-विवाह, पितृसत्तात्मकता, दाम्पत्य बिखराव की स्थिति को निरूपित करने का प्रयास किया गया है जगन और ऊषा के प्रेम विवाह करने पर भी जगन ऊषा को खुद से कमतर ही समझता है और शादी के शुरू में ही अपनी आदतें पहले से ही बता देता है ताकि ऊषा उसके विरूद्ध न चले। ऊषा के बच्चा होने पर जगन ऊषा का हाथ नहीं बँटाता, जिस कारण ऊषा को ममत्व ही बोझ लगने लगता है। ''वह कहती है कि बच्चे ने जहाँ जगन को आह्लाद के दुर्लभ क्षण, वहाँ ऊषा को मूत भरे,

तौलियों, दूध की जूठी बोतलों, पोतड़ों से घर की घुड़साल में बंद कर दिया था।'' मातृत्व अगर स्त्री की सार्थकता है तो बेड़ियां भी कम नहीं हैं।

ममता कालिया का तीसरा उपन्यास 'प्रेम कहानी' है, इसमें अंतर्जातीय प्रेम विवाह की समस्या को उठाया गया है, साथ ही नारी सुरक्षा के प्रश्न को भी लिया गया है कि नारी कहाँ सुरक्षित है ? ममता कालिया अलका सरावगी के उपन्यास 'शेष कादम्बरी' में लिखे हुए एक तीखे वाक्य की ''औरत आज अपने घरों में ही सुरक्षित नहीं है'' से सहमत दिखाई देती हैं। जया के दूर के अंकल जया का यौन शोषण करने की कोशिश करते हैं। आज प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं का यौन शोषण होना एक आम बात है। ज्यादातर घर परिवारों के पुरूष ही इन कामों को अंजाम देते हैं। ममता कालिया अपने इस उपन्यास में हमारी सामाजिक व्यवस्था के नग्न स्वरूप को बड़ी ही निडरता व यथार्थता से हमारे सामने रखती हैं। इस उपन्यास में स्त्री विमर्श सतहीपन में नहीं परम्परा और आधुनिकता की द्वंद्वात्मकता में है। ममता कालिया के ''लड़कियाँ'' उपन्यास में विज्ञापन कंपनियों के मालिकों द्वारा लड़कियों के शोषण की कहानी है। इस उपन्यास में अकेले रहती अविवाहित लड़कियों की समस्याएँ हैं जो कि विज्ञापन जगत के काम से जुड़ी हुई हैं को उठाया गया है। एक अकेली रहती स्त्री की सबसे बड़ी ताकत उसके विचार हैं। वह अपनी सुरक्षा के लिए हथियार रखती है, लेकिन उसे बाद में आभास होता है कि उसे हथियार नहीं हिम्मत की जरूरत है।

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में भी लेखिका ने दाम्पत्य जीवन के बिखराव का चित्रण किया है। किन्तु इस उपन्यास की नायिका कविता बौद्धिक स्तर पर जागरूक महिला है। कविता का पति आई.ए.एस. अधिकारी है। वह इतना पढ़ा-लिखा और उच्च पद पर होने के बावजूद भी एक तरफ तो अपनी प्रबुद्ध पत्नी पर गर्व करता है, वहीं दूसरी तरफ रूढ़िहीन विचारों व कार्यों से रूष्ट होता है। ''उसे हरहाल में कविता को अपने से एक सीढ़ी नीचे खड़ा देखना पसंद था। जबकि कविता कदम से कदम मिलाकर चलने में यकीन रखती थी।'' कविता की जिंदगी इस सत्य को प्रमाणित करती है कि आई.ए.एस. या आई.पी.एस. पद प्राप्त पति किसी कन्या को सुखी रखने के लिए पर्याप्त नहीं होते। कविता खुद को न तो पति की संपत्ति मानती है और न ही भोग्यवस्तु वह बौद्धिक मुठभेड़ करती हुई अपनी मानवीय उपस्थिति दर्ज कराती है तथा पुरूष सत्तात्मक समाज द्वारा स्थापित मान्यताओं को चुनौती तो नहीं देती किन्तु स्थितियों की पहचान अवश्य करती है। संस्कार बोध के कारण सामंजस्य एकदम दुष्कर लगता है तभी घर छोड़ने का निर्णय लेती है।

लेखिका के 'दौड़' उपन्यास में मानसिक एवं शारीरिक शोषण की शिकार स्त्री की कहानी है। इसी शोषण की वजह से राजुल नौकरी से त्यागपत्र दे देती है निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि ममता कालिया का स्त्री विमर्श स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करते हुए पुरूष का विरोध नहीं वरन् पुरूष की झूठी अहंकारिता और उत्पीड़न की प्रवृत्ति का विरोध दर्ज कराना है। राजी सेठ के शब्दों में ममता कालिया के स्त्री विमर्श की लय मिलायी जा सकती है कि 'स्त्री की चुनौती अपने समीकरण को छोड़कर पुरूष के समीकरण पाना नहीं बल्कि अपने सत्य से वृहत् सत्य की परिधि तक जाना है'।

डॉ. सीमा रायकवार
अतिथि विद्वान, हिन्दी
शा.पी.जी. कन्या महाविद्यालय, सागर

बेटियों का आत्मबल

हम दर्द तुम्हारा बाटेंगे,
तुम नहीं जलोगी ज्वाला में।
मुरझाएगा जब एक पुष्प,
हर पुष्प रोएगा माला में।
हम लोक लाज के कारण,
तुमको तिल तिल मरने न देंगे।
जिसको जो कहना कह लेना,
कत्वर्य बोध समझा देंगे।
तुम भी तो घर में खुशीया थी,
तुम ही तो घर का उजयाला थी।

पापा की तो तुम लाड़ली थी,
माँ की आँखों का तारा थी।
बेटी हो तुम्हें जब भी पीड़ा,
अकेले मत सहती जाना।
एक बार तो तुम जरूर,
अपने माता पिता को बतलाना।
हम तुम्हें सहारा क्यों ने दे
तुम तो इस घर की गली हो,
इस पावन पुनित बसुन्धरा की,
तुम ही तो हरियाली हो।।

श्रीमति सपना राजौरिया
अतिथि विद्वान
(वनस्पति विभाग)

एक संदेश बेटियों के लिये

बहको मत बेटियो, कुल को समझो खास ।
पैंतीस टुकड़ों में कटा, श्रद्धा का विश्वास ।
भरोसा मत कीजिए, सब पर आंखें मीच ।
स्वर्ण मृग के भेष में, आ सकता मारीच
मां बाप के हृदय से, गर निकलेगी आह ।
कभी सफल होगा नहीं, ऐसा प्रेम विवाह ।
आधुनिकता के समर्थकों, इतना रखना याद ।
बिन मर्यादा आचरण बिगड़ेगी औलाद ।
जीवन स्वतंत्र आपका, करिए फैसला आप ।
पर ऐसा कुछ न कीजिए, मुंह छिपाए मां बाप ।
घर आंगन की गौरैया, कुल की इज्जत आप ।
सावधान रहना जरा, षड्यंत्रों को भांप ।
बॉलीवुड की गंदगी, खत्म किए संस्कार,
जालसाज अच्छे लगे, बुरा लगे परिवार ।
जब कभी तन पर चढ़े, अंधा इश्क खुमार
इस दरिंदगी को याद तुम, कर लेना इकबार ।
नारी तुम श्रद्धा रहो, न धर उपयोगी चीज ।
फिर किस की औकात जो, काट रखे तुम्हें फ्रीज ।
संस्कारों की सराहना, कुकृत्य धिक्कारो आज ।
आने वाली पीढ़ियां, करेंगी तुम पर नाज ।

श्रीमती वंदिनी जैन
अतिथि विद्वान व्यवसायिक पाठ्यक्रम,
नैदानिक एवं पोषण गृह विज्ञान विभाग
शास. कन्या स्वशासी स्नातकोत्तर
उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर

माता पिता और शिक्षकों द्वारा दिया गया मार्गदर्शन

मैं कु. सोनल सोनी जो कि शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में ही पढ़ रही हूँ । मैंने इस महाविद्यालय से एम. एच. एस. सी. (पोषण एवं आहार) विषय से किया है । मैं पहले साइंस की छात्रा रही पर किसी कारणवश मैं अपना दाखिला किसी अन्य महाविद्यालय में कराना चाहती थी, पर कहा जाता है न कि - 'एक शिक्षक ही है जो हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाना चाहते हैं' - मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ मेरे विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. रेणुबाला शर्मा मैडम, डॉ. अंजना नेमा मैडम जिन्होंने मेरे अन्दर किसी कलाओं को पहचाना और मुझे इस विषय से अवगत कराया और फिर क्या था - मैंने भी अपने शिक्षकों द्वारा दिये गये ज्ञान का अर्जन किया उनके द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया एवं यहां पर होने वाली विभिन्न गतिविधियों में सहभागी रही और प्रथम, द्वितीय, तृतीय कोई न कोई स्थान प्रत्येक प्रतियोगिता में प्राप्त करती रही ।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर में सर्वोच्च अंक पाकर स्वर्ण पदक भी प्राप्त किये और अब वर्तमान में मैं स्वयं अपने ही महाविद्यालय में व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत आने वाले विषय पोषण एवं आहार की व्याख्याता हूँ । इससे बड़ी उपलब्धि मेरे लिये और क्या हो सकती है । ऐसे शिक्षकों को मेरा दिल से शुक्रिया जिन्होंने मुझे सही मार्गदर्शन दिया और मेरे माता पिता का शुक्रिया जिन्होंने मुझ पर हमेशा गर्व महसूस किया ।

कु. सोनल सोनी
गृह विज्ञान विभाग

बेटियां

जिसके पास नहीं हैं बेटी
गुलशन का रूह गुल का सिलारा है बेटियां
फुरसत मिले तो जरा इन्हें पढ़ भी लीजिए
गीता पुराण बाईबिल कुरान हैं बेटियां
बेटे तो अपने माता-पिता को छोड़ देते हैं
अकेले लेकिन बेटियां माता-पिता की लाडिया
और सहारा है
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को
दोनों कुलों की लाज होती हैं बेटियां
कोई नहीं दोस्तो एक दूसरे से कम
हीरा अगर है बेटा तो मोती हैं बेटियां

अंकिता रजक
बी.एच. एस-सी., तृतीय वर्ष

जिन्दगी

कभी हंसाती, तो कभी रूलाती है जिंदगी
हर रोज नया कुछ, सिखाती है जिंदगी
कभी गम, तो कभी खुशी देती है जिंदगी
ऊपर वाले की दी, एक सौगात है जिंदगी.....
कभी दोस्तों से भरी होती है तो,
कभी तन्हाईयां दिखाती हैं,
कभी असफल कर सीख दिलाती हैं जिंदगी
तो कभी बातों में, मुलाकातों में, यादों में, घुल-मिल जाती है जिंदगी.....
मंजिलों को पाना सिखाती है जिंदगी
अच्छे-बुरे पल दिखाती है जिंदगी
इतिहास के पन्नों को याद करो तुम आज
क्या-क्या नहीं दिखाती है जिंदगी.....

मानसी सेन
बी.एच. एस-सी., तृतीय वर्ष

मां

घुटनों से रेंगते-रेंगते कब पैरों पर खड़ा हुआ ।
तेरी ममता की छांव में जाने कब बड़ा हुआ ।
काला टीका, दूध-मलाई आज भी सब ठीक वैसा है ।
मैं ही मैं हूं हर जगह प्यार ये तेरा कैसा है ।
सीधा-साधा, भोला-भाला, मैं ही सबसे अच्छा हूं ।
कितना भी हो जाऊं बड़ा 'मां' मैं आज तेरा बच्चा हूं ।

रोशनी राय
बी.एच. एस-सी., तृतीय वर्ष

गांव के हालात

निर्मल सा व्यवहार कहां मानव बता दे वो गांव कहां ।
सीधा सरल था व्यवहार जहां मानव बता दे वो गांव कहां ।
गांवों की निर्मल हवा है, कहां मानव बता दे वो गांव कहां ।
गंगा सी वो नदियां कहां मानव बता दे गांव कहां है ।
शहरों के है झुंड हर जगह मानव बता दे गांव कहां ।

अभिलाषा रजक
बी.एच. एस-सी., तृतीय वर्ष

सागर सिटी 4 नवदुनिया
भोपाल, गुरुवार 21 अप्रैल, 2022

जीवन की सभी उपलब्धि का कारण मां का आशीर्वाद : पांडेय

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर में वार्षिक पुरस्कार वितरण के आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पद्मश्री रामसहाय पांडेय थे। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन को दिशा देने में मां और बहनों का महत्वपूर्ण योगदान है। मैं सभी बेटियों को शुभकामनाएं देता हूं कि आप अपने जीवन में इच्छित लक्ष्य प्राप्त करें। भारत की संस्कृति बहुत समृद्ध है। यहां प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के अवसर उपलब्ध हैं। अपना लक्ष्य निर्धारित कर लगन से जुटे रहें।

विशिष्ट अतिथि डा. शरद सिंह ने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जहां हर प्रदेश की अपनी संस्कृति खान, पान वेशभूषा तथा अपना जीवन जीने का तरीका है। उन्हीं का प्रदर्शन विभिन्न ललित कलाओं के माध्यम से किया जाता है। उन्होंने जेनरल और अकबर की कहानी के माध्यम से खेल के महत्व को छात्राओं को समझाया। डा. सीडी बाडिया ने महाविद्यालय की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए कहा महाविद्यालय उच्च शिक्षा को ज्ञान का अंग बनाने के लिए तरह तरह के मंच प्रदान करता है।

महाविद्यालय की प्राचार्य डा. इला तिवारी ने कहा वर्षभर विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता करने के पश्चात पुरस्कार प्राप्त करना आनंद की अनुभूति करने का यह अवसर बहुत सुखद होता है। संगीत विभाग द्वारा डा. प्रेम चतुर्वेदी के निर्देशन में सरस्वती वंदना का गायन किया गया। प्रतिवेदन छात्र संघ प्रभारी डा. निशा इंद्रगुरु ने पढ़ा। डा. मोनिका हर्डीकर ने वर्ष की खेल गतिविधियों ट्राफी एवं शील्ड छात्राओं को प्रदान कराई। डा. अंशु सोनी ने एनसीसी कैडेट्स को शील्ड एवं ट्राफी दी। युवा उत्सव के पुरस्कार डा. श्वेता ओझा, डा. शीतांशु रजौरिया एवं डा. अनिमेष जैन द्वारा अतिथियों के माध्यम से प्रदान करवाए। एनएसएस के पुरस्कार डा. सरिता जैन, डा. भावना रमैया एवं डा. अपर्णा चाचौंदिया मंच के माध्यम से प्रदान करवाए। संचालन डा. अंजना चतुर्वेदी युवा उत्सव प्रभारी ने किया। आभार डा. सरिता जैन ने किया। कार्यक्रम में डा. अरविंद बोहरे, डा. नरेन्द्र सिंह ठाकुर, डा. रजनी दुबे, डा. सुनीता त्रिपाठी, डा. रश्मि दुबे, डा आनंद तिवारी, आशीष रैकवार, रोहित सैनी एवं छात्राएं उपस्थित थीं।

वार्षिक पुरस्कार वितरण करते पद्मश्री रामसहाय पांडेय व अन्य अतिथि। ● नवदुनिया

आचरण सागर शहर
सागर, गुरुवार, 21 अप्रैल 2022

जीवन की समस्त उपलब्धि का कारण बहनों एवं माताओं का आशीर्वाद : रामसहाय

सागर, आचरण संवाददाता।

आचरण सागर शहर
सागर, बुधवार, 22 दिसम्बर 2021

कला सहृदयता तथा आत्मा द्वारा ही पोषित व विकसित होती है : डॉ. इला

सागर, आचरण संवाददाता।

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर में युवा उत्सव के द्वितीय दिवस में चित्रकला प्रतियोगिता द्वारा आयोजन प्रारंभ हुआ। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. इला तिवारी ने कहा कि सहृदय तथा आत्मा द्वारा ही पोषित व विकसित होती है। महाविद्यालय स्तर पर आपको अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का पर्याप्त अवसर युवा उत्सव के माध्यम से प्राप्त हो रहा है। जिला स्तरीय बैठक में चयन हुए विषय जलियांवाला बाग घटना को चित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। प्रतियोगिता प्रभारी डॉ. दीपा खटीक ने छात्राओं को उत्साहित करते हुए दिए विषय का उद्देश्य, स्वतंत्रता संघर्ष से युवा पीढ़ी को परिचित कराना है। द्वितीय प्रतियोगिता मिमिक्री का आयोजन किया गया जिसमें बहुत छात्राओं ने हिस्सा लिया एवं बुन्देली महिलाओं एवं शराबी व नेताओं की एक्टिंग के साथ ज्वलंत विषय पर अभिनय कर वाहवाही बटोरी। मिमिक्री का आयोजन डॉ. भावना रमैया एवं टीम द्वारा किया गया। निर्णायक मण्डल में डॉ. आशा पाराशर, डॉ. प्रतिमा खरे, डॉ. रश्मि दुबे ने अपनी भूमिका का निर्वहन किया। इसके पश्चात स्किट (हास्य नाटिका) का आयोजन डॉ. बिन्दु श्रीवास्तव के संयोजन में किया गया। संचालन करते हुए कु. सुप्रिया यादव ने छात्राओं को उत्साहित करते हुए कहा कि कुछ ऐसा करो कि मिसाल बन जाये।

प्रथम समूह द्वारा साक्षी तिवारी जैन द्वारा आतंकवाद पर व्यंग्यपूर्ण प्रदर्शन कर तालियां बटोरी। सुश्री मनीषी शाक्य ने कहा कि अक्षर-अक्षर हमें शब्द का अर्थ बताते, कभी प्यार से तो कभी डांट से जीवन जीना हमें सिखाते।

मूक अभिनय के माध्यम से छात्राओं ने गांधी जी के तीन बंदर की प्रस्तुतीकरण की। एकांकी प्रतियोगिता की संयोजक डॉ. अपर्णा चाचौंदिया ने संचालन करते हुए कहा कि अभिनय करना अपने अंदर समाहित प्रतिभा को विभिन्न स्वरूप में लाना एक बड़ा कार्य है।

छात्राओं द्वारा गांधी चौक नाटक प्रदर्शन सम्पूर्ण उत्साह उमंग के साथ किया। तत्पश्चात् निर्णय डॉ. नरेन्द्रसिंह ठाकुर, श्रीमती तरुण्णा नायक, डॉ. भावना रमैया ने किया। प्रश्नमंच का आयोजन डॉ. निशाइन्द्र गुरु के संयोजन में किया गया जिसमें आडियो एवं वीडियो राउंड एवं सामान्य ज्ञान के प्रश्न खेल राजनीति एवं आर्थिक समस्याओं को सम्मिलित कर किया गया। अंतिम प्रतियोगिता कार्टूनिंग विधा कराई गई जिसका विषय "ऑनलाइन शिक्षण" पर छात्राओं द्वारा चित्र बनाए गये। डॉ. अंशु सोनी ने कहा कि कार्टूनिंग के माध्यम से आप विषय से उत्पन्न कमियों पर ध्यान आकृष्ट करकर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकते हैं।

आयोजन । गर्ल्स कॉलेज में जिला स्तरीय युवा उत्सव का आयोजन

देश स्वावलंबी तभी होगा जब हर खेत में पानी और हर हाथ में काम होगा: शैलेन्द्र

सागर, आचरण संवाददाता।

आचरण सागर शहर
सागर, मंगलवार, 21 दिसम्बर 2021

रंगोली, वाद-विवाद, शास्त्रीय एकल गायन, समूह भारतीय गायन प्रतियोगितायें हुईं

एक्सीलेंस गर्ल्स कालेज में युवा उत्सव प्रारंभ

सागर, आचरण संवाददाता।

गर्ल्स कॉलेज में छात्राओं ने पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

बिपिन रावत की सैन्य नीति से मजबूत भारत विषय पर छात्राओं ने बनाए कोलाज

आचरण सागर शहर

एक्सीलेंस गर्ल्स कालेज में युवा उत्सव प्रारं

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

क्रांतिदूत

2019-20

बेटियों के सर्वांगीण विकास के अवसर

माँ

जब आँख खुली तो अम्मा की गोदी का एक सहारा था।
उसका नन्हा सा आँचल मुझको भूमण्डल से प्यारा था।।
उसके चेहरे की झलक देख चेहरा फूलों सा खिलता था।
उसके अमृत की एक बूँद से मुझको जीवन मिलता था।।
हाथों से बालों को नोचा पैरों से खूब प्रहार किया।
फिर भी उस माँ ने पुचकारा हमको जी भर के प्यार किया।।
मैं उसका राजा बेटा था वो आँख का तारा कहती थी।
मैं बनूं बुढ़ापे में उसका बस एक सहारा कहती थी।।
उँगली को पकड़ चलाया था पढ़ने विद्यालय भेजा था।
मेरी नादानी को भी निज अन्तर में सदासहेजा था।।
मेरे सारे प्रश्नों का वो फौरन जवाब बन जाती थी।
मेरी राहों के काँटे चुन वो खुद गुलाब बन जाती थी।।
मैं बड़ा हुआ तो यौवन में एक रोग प्यार का ले आया।
जिस दिल में माँ की मूरत थी वो रामकली को दे आया।।
शादी की नए-नए रिश्ते बना पिछले रिश्तों को भूल गया।
अब करवा चौथ मनाता हूँ, माँ की ममता को भूल गया।।
हम भूल गए उसकी ममता, मेरे जीवन की थाती थी।
हम भूल गए अपना जीवन, वो अमृत वाली छाती थी।।
हम भूल गए वो खुद भूखी रह करके हमें खिलाती थी।
हमको सूखा बिस्तर देकर खुद गीले में सो जाती थी।।
हम भूल गए उसने ही होठो को भाषा सिख लाई थी।
मेरी नींदों के लिए रात भर उसने लोरी गाई थी।।
हम भूल गए हर गलती पर उसने डांटा-समझाया।
बच जाऊँ बुरी नजर से काला टीका सदा लगाया था।।
हम बड़े हुए सो ममता वाले सारे बन्धन तोड़ आए।
बंगले में कुत्ते पाल लिए माँ को वृद्धाश्रम छोड़ आए।।
उसके सपनो का महल गिराकर कंकर कंकर बीन लिए।
खुदगर्जी में उसके सुहाग के आभूषण तक छीन लिए।।
हम माँ को घर के बँटवारे की अभिलाषा तक ले आए।
उसको पावन मंदिर से गाली की भाषा तक ले आए।।
माँ की ममता को देख मौत भी आगे से हट जाती है।
गर माँ अपमानित होती, धरती की छाती फट जाती है।।
घर को पूरा जीवन देकर बेचारी माँ क्या पाती है।
रूखा - सूखा खा लेती है पानी पीकर सो जाती है।।
जो माँ जैसी देवी घर के मंदिर में नहीं रख सकते हैं।
वो लाखों पुण्य भले कर ले इंसान नहीं बन सकते हैं।।
माँ जिसको भी जल दे दे वो पौधा बन जाता है।
माँ के चरणों को छूकर पानी गंगाजल बन जाता है।।
माँ के आँचल में युगों युगों से भगवानों को पाला है।
माँ के चरणों में जन्नत है, गिरिजाघर और शिवाला है।।
माँ कबिरा की साखी जैसी, माँ तुलसी की चौपाई है।
मीराबाई की पदावली खुसरो की अमर रूबाई है।।
माँ आँगन की तुलसी जैसी पावन बरगद की छाया है।
माँ वेद ऋचाओं की गरिमा, माँ महाकाव्य की काया है।।
माँ मानसरोवर ममता का, माँ गोमुख की ऊँचाई है।
माँ परिवारो का संगम है, माँ रिश्तों की गहराई है।।
माँ हरी दूब है धरती की, माँ केसर वाली क्यारी है।
माँ की उपमा केवल माँ है, माँ हर घर की फुलवारी है।।
सातों सुर नर्तन करते जब कोई माँ लोरी गाती है।
माँ जिस रोटी को छू लेती है वो प्रसाद बन जाती है।।
माँ हँसती है तो धरती का जर्रा-जर्रा मुस्काता है।
देखो तो दूर क्षितिज अंबर धरती को शीश झुकाता है।।
माना मेरे घर की दीवारों में चन्दा सी मूरत है।
पर मेरे मन के मंदिर में बस केवल माँ की मूरत है।।
माँ सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, अनुसूइया, मरियम, सीता है।
माँ पावनता में रामचरितमानस् है भगवद् गीता है।।
अम्बा तेरी हर बात मुझे वरदान से बढ़कर लगती है।
हे माँ तेरी सूरत मुझको भगवान से बढ़कर लगती है।।
सारे तीरथ के पुण्य जहां, मैं उन चरणों में लेटा हूँ।
जिनके कोई सन्तान नहीं, मैं उन मॉओं का बेटा हूँ।।
हर घर में माँ की पूजा हो ऐसा संकल्प उठाता हूँ।
मैं दुनियां की हर माँ के चरणों में ये शीश झुकाता हूँ।

- खुशी जैन
B.Com IInd Year
Roll No. C/18/566
Mob. No. 9522830368

❖ ❖ ❖

लड़की

लड़की है सोच कर उसे घर से बाहर न जाने दिया।
छोटे कपड़ों में देखकर उसे जलील कर दिया गया
सलवार कमीज में देखकर उसे ओह .....गाँव वाली मेडम का दर्जा दिया गया
मेकअप देखकर उसे फेक बताया गया
बिना मेकअप के उसे गवार समझा गया
लड़की है सोच कर उसे घर से बाहर न जाने दिया
काला रंग देखकर उसे रिजेक्ट किया गया
गोरा रंग देखकर उसे सड़कों पर छेड़ा गया
छोटी होने पर उसे बच्ची बोला गया
ज्यादा लंबा होने पर लड़का न मिलने का डर सताया गया
लड़की है सोच कर उसे घर से बाहर न जाने दिया
लड़को को दोस्त बनाने पर उसे चरित्रहीन समझा गया
लड़कों से बात करने से उसे हमेशा रोका गया।
और जब निर्भया कांड हुआ तो किसी से कुछ नहीं बोला गया
रात को घर से बाहर निकलने पर उन दरिंदों की
गंदी नजरों के साये का डर सताया गया।
और उसे घर से बाहर न जाने दिया गया
लड़की है सोचकर उसे घर से बाहर न जाने दिया
रोते हुये देखकर उसे कमजोर समझा गया
जोर से हँसने पर उसकी हँसी को दबा दिया गया
उसके सपनो को पूरा होते हुये देखकर ''लड़की हाथ से निकल रही है''
कहकर रोक दिया गया/लड़की हो घर में ही रहो कहकर उसे घर के अंदर ही रखा गया।
लड़की है सोच कर उसे घर से बाहर न जाने दिया
फिर कहते हो लड़कियाँ कुछ नहीं कर सकती?
किसी करीबी दोस्त के साथ घूमने जाता देख न जाने क्या-क्या बोलने लगते हैं
और अनजान लड़के से पूरी जिंदगी काटने के लिये कहते हैं
फेंसी कपड़े पहनता देख लड़की को गिरा हुआ कहने लगते है
पर खुद की सोच का कुछ नहीं करते हैं
ये जमाने मुझे तु ही बता दे लड़की का दर्जा मुझे दिया ही क्यों
जब इतनी बंदिशें ही लगाने से तो जानवर ही बना देते।

– आस्था जैसवाल
B.Sc. IIInd Year
Roll No. M/17/04
Mob. No. 8823064949

❖ ❖ ❖

माता पिता के चरणों में स्वर्ग है

सुख का सूरज यहाँ नहीं ढलता है,
जिंदगी को सुकून यहाँ मिलता है,
माँ के आँचल की ठंडी छाया है,
पिता के प्यार का सर पे साया है,
थामकर हाथ चलना सिखाया हमें,
प्यार की थपकियों से सुलाया हमें,
आसान नहीं चुकाना इनका हमपे जो कर्ज है,
माता पिता के चरणों में स्वर्ग है।

युवा पीढ़ी बदलकरके विवेकानंद हो जाए

कथानक व्याकरण समझे,
तो सुरभित छंद हो जाए,
मेरा भारत फिर से सुखद मकरंद हो जाए।
मेरे ईश्वर मेरे दाता,
ये 'बसुंधरा' मांगती तुझसे
युवा पीढ़ी बदल करके
विवेकानंद हो जाए।।

– वसुन्धरा लहरिया
B.Sc. IIIrd Year
Roll No. M/17/513
Mob. No. 9340894300

❖ ❖ ❖

सबसे प्यारी माँ

सबसे प्यारी होती है माँ
बच्चों का संसार होती है माँ
झूठ बोले तो डाँट लगाती है माँ
सच बोलने की राह दिखाती है माँ
इतनी प्यारी होती हैं माँ
बच्चों का संसार होती हैं माँ
सारे दुःख अकेले सहती है माँ,
बच्चों को सुख देती है माँ,
बिना कहें जरूरतों को पूरा करती हैं माँ,
मेरी पढ़ाई में मदद करती हैं माँ,
बड़ो का आदर करना सिखाती हैं माँ,
छोटो का सम्मान करना सिखाती हैं माँ,
मन में कोई परेशानी हो तो
हल करना बताती है माँ,
बच्चों के लिए जीवन वार देती है माँ,
आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है माँ,
जिन्दगी में कोई मुस्किल आये तो,
उससे लड़ना सिखाती है माँ,
इतनी प्यारी होती माँ,
बच्चों का संसार होती है माँ

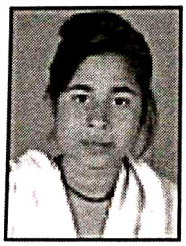

– प्रिया अहिरवार
B.A. IInd Year

❖ ❖ ❖

नारी जीवन

नारी जग की जननी है, संसार नया रच देती है।
चुप रहती कुछ न कहती, दर्दो को हरदम सहती।।
परिवार सम्हाले बच्चों का, खुद भूखी रह जाती है।
इंसाफ नहीं मिलता उसको, हर युग में सतायी जाती है।।
सीता ने भी जुलम सहे, मर्यादा को ऑच न आने दी।
अग्नि परीक्षा देकर खुद, श्रीराम की लाज बचाती है।।
फिर भी दुनिया की बातों से, वन को भेजी जाती है।
क्या मर्यादा पुरूषोत्तम की, यह मर्यादा कहलाती है।।
सती प्रथा का जुल्म सहा, अब दहेज को सहती है।
कभी जहर खुद पीती है, कभी जलायी जाती है।
वर्तमान की नारी भी, सहमी सी दिखती है।।
खुलकर जीना चाहे तो, शिकार दर्द का बनती है।।
मीरा ने भी जहर पिया था, अपना धर्म बचाने को।
त्याग बड़ा है नारी का, नारी की व्यथा निराली है।।
मॉ बेटी की गाली भी, नारी को ही दी जाती है।
दो दो कुल की लाज रखे, दुनिया की रीति निभाती है।।
दुनिया भी हिल जाती है, ये धरती भी फट जाती है।
इंसाफ के खातिर नारी, जब भी कोहराम मचाती है।।
दुर्गा काली बनकर तूही, दुनिया के जुल्म मिटाती है।
मिट जाएगी दुनिया ही, दुनिया जो तुझे मिटाती है।।

❖ ❖ ❖

नारी

कौन तुम्हे कहता है अवला,
दबी राख में चिंगारी हो,
ममता की जीवित मूरत हो,
भारत की तुम नारी हो।

दुर्गा जैसा शौर्य है तुझमें,
तुम वीरों की माता हो।
मानव अब तक जान न पाया
इतिहास में बनती गाथा हो।

सावित्री सा त्याग है तुझमें,
यम भी तुझसे हार गया।
तेरी ममता का सुख पाने,
ईश्वर ने अवतार लिया।

देवों की तुम जननी हो,
देवी तुमको कहते है।
ममता की तुम मूरत हो,
माता तुझको कहते हैं।

उषा विश्वकर्मा
B.A. IInd Year
Roll No. A/18/615
Mob. No. 8085729861
6266357637

❖ ❖ ❖

मैय्या मेरी

वो मैय्या है मेरी
पापा के जाने से रात में उठ उठ कर रोती है
हमारे सामने हमेशा मुस्कराती रहती है
कहते है खुदा की सबसे सुंदर रचना है
पर माँ में तो खुद खुदा बसते है
हमारी कामयाबी ही उनका स्वप्न है
क्योकि हम ही उनके अनमोल रत्न है

– प्राची जैन
B.Sc. IIIrd Year, Roll No. M/17/399
Mob. No. 9516587657

❖ ❖ ❖

भारतीय समाज में नारी का स्थान

राजकुमार अहिरवार
सहायक प्राध्यापक हिन्दी,
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर
उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.) मो. 9424346942

सम्पूर्ण विश्व चराचर, चेतन-अचेतन प्राकृतिक अवयवों का संकलन है। इसी संकलन में मनुष्य आदिम काल से वर्तमान तक अनेकानेक परिवर्तनों से प्रभावित होता आया है। प्रकृति में मनुष्य के दोनों रूपों (स्त्री एवं पुरूष) का समान महत्व है, लेकिन मानव मस्तिष्क के बौद्धिक विकास ने स्त्री-पुरूष के मध्य विभेद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सिर्फ लिंगीय असमानता को आधार मानकर पुरूष द्वारा बरती गई नारी विषयक बर्बरता ने समाज को दो भागों में अवश्य बाँटा है। विश्व और भारत की प्राचीनकालीन सभ्यताओं में नारी असमानता के लक्षण दर्शित नहीं होते हैं। चाहे वह मिश्र की सभ्यता हो या बेबीलोन की अथवा मेसोपोटामिया की हो या फिर भारत की सैंधव सभ्यता हो, कहीं पर भी नारी स्वातंष्य को बाधित नहीं किया गया है।

भारत में नारी असमानता की नींव विदेशी आर्यों के आगमन, उनके कृत्य और आचरण के द्वारा रखी गई। भारतीय साहित्य के उत्तरवैदिक काल, स्मृतिकाल, पुराणकाल, रामायण काल और महाभारत काल ने नारी के ऊपर पुरूषवादी वर्चस्व को बलात् थोपा है। जिस समाज ने (खासकर पुरूष समाज ने) अपने हित संवर्धन के लिए, अपनी ही जननी, भगिनी, पुत्री को अधिकार विहीन कर, भोग की वस्तु और पैर की जूती समझा हो; भला वहाँ पर नारी-मुक्ति की कामना कैसे की जा सकती है। किसी भी समाज की उन्नति को बाधित करने के लिए सबसे अच्छा और सरल उपाय है- शक्ति बल से, बुद्धिबल से उसके शैक्षणिक अधिकारों, प्रकृतिप्रदत्त मौलिक अधिकारों को छीन लेना। भारतवर्ष में समस्त महिला समाज को शूद्र घोषित कर उसे शिक्षा-अर्जन से अनन्त काल तक के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया था। भावनात्मक, धार्मिक, कर्मकाण्डीय उपकरणों से सुसज्जित बुद्धिजीवी पुरूष समाज (खासकर उच्चवर्गीय पुरूष) निरंतर नारी समाज का मस्तिष्क हरण (ब्रेन वाश) करता आया है, जिसे सरल सुबोध नारी-हृदय, बुद्धि के बल पर कभी भी धूर्त समाज को चुनौती न दे सका। जब कभी अपवाद स्वरूप नारी-अस्मिता ने करवटें बदलीं, तब-तब पुरूष समाज ने नारी महिमा का मिथ्या गायन कर, सती प्रथा का महिमामंडन कर, पुरूष की अर्धांगिनी घोषित कर सदियों तक अनाचार, अत्याचार, यौनाचार के प्रवचन किये हैं। भारतीय इतिहास का सबसे दुर्दान्त और निन्दनीय काल राजपूत काल है। जातीय स्वाभिमान, वंशीय श्रेष्ठता का उद्घोष करने वाले क्षत्रिय समाज ने स्मृतियों में वर्णित घृणित कानूनों का अक्षरशः पालन कराया है। परिणामतः नारी पुरूष की सनातन दासी घोषित हुई। स्मृतिकारों के वंशज और स्वयं स्मृतिकार अपनी बुद्धि-विलासिता पर इठलाते नजर आने लगे। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अधिकार वंचिता स्त्री, कभी मनुष्य का दर्जा प्राप्त न कर सकी। वह तो संतति-जनन-मशीन मात्र बनकर रह गई।

बहुसंस्कृति-मिलन अच्छे-बुरे दोनों परिणाम हासिल करता है। भारत में भी अरबी संस्कृति और यूरोपीय संस्कृति ने अपना रंग अवश्य जमाया है। हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति में यूँ तो अनेक समानताएँ थी, परन्तु कुछेक असमानताओं ने भारतीय समाज को आलोड़ित-विलोड़ित जरूर किया था। उदाहरण स्वरूप महिला को वैवाहिक रश्मों में आजादी थी।

अल्पमात्रा में आर्थिक अधिकार भी प्राप्त थे। बड़ी बात तो यह थी कि उन्हें घर पर ही मौलवी से शिक्षा पाने का अधिकार था। उक्त तीनों अधिकार भारतीय महिलाओं (अपवादों को छोड़कर) को कदापि स्वीकृत नहीं थे। अरबी, तुर्की और मुगल संस्कृति ने भारतीय समाज को अधिकाधिक प्रभावित तो नहीं किया, लेकिन इस समाज को झकझोरा अवश्व है। हालाँकि उक्त संस्कृतियों ने भारतीय समाज की महिला विरोधी रीतियों-नीतियों को कभी चुनौती नहीं दी है, बल्कि उनको अपनाने और पोषित करने का ही प्रयास किया है। ब्रिटानी साम्राज्य की मजबूत पकड़ ने भी भारतीय समाज को विविध कोणों से प्रभावित करने का प्रयास किया है। चूँकि इंग्लैण्ड में नारी पुरूष अधिकारों के वितरण में अधिक असमानता नहीं थी, लेकिन भारत में अंग्रेज पूर्व से स्थापित नारी-भेद को समाप्त करने का अपनी तरफ से कोई ठोस प्रयास नहीं कर सके। अंग्रजों की शिक्षा नीति को भले ही आलोचक एक कूटनीति करार देते हों, परन्तु उसके सद्परिणाम भी भारतीय समाज को देखने को मिले हैं। अंग्रेजों की शिक्षा नीति का ही परिणाम है कि भारत विश्व-ज्ञान से परिचित हो सका, अन्यथा वह आज भी पुराण और स्मृतियों के तर्कहीन मिथ्या जाल में आबद्ध बना रहता। राजाराम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महादेव गोविन्द रानाडे, ज्योति राव फूले, गोपाल कृष्ण गोखले, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाल-बाल-पाल, रासविहारी घोष, सुभाषचंद्र बोस, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, अब्दुल कलाम आजाद आदि अनेक भारतीय अँग्रेजी शिक्षा के कारण ही विद्धान और तर्कशील हो सके, क्योंकि अँग्रेजी भाषा ने ही उक्त भारतीयों को वैश्विक ज्ञान, तर्क, संस्कृति, धर्म, नीति, आदि से परिचित कराया। इनके सम्मिलित और समन्वित प्रयास से अंतत: भारत 1947 को स्वतंत्र घोषित हुआ है। धर्मभीरू धर्मवित्ता, उपासक, अंधभक्त यह जरूर कहते सुनते पाये जाते हैं कि भारत में सनातन काल से शतरूपा, दुर्गा, काली, कात्यायनी, पार्वती, सीता, सरस्वती, लक्ष्मी, आदि देवनारियों ने नारी समाज का प्रतिनिधित्व किया है, परन्तु दुर्भाग्य यह कि किसी भी देवनारी ने समाज में आमूल-चूल परिवर्तन कभी नहीं किया; क्योंकि या तो वे पौराणिक आख्यानिक कल्पित नारियॉ मात्र हैं, या फिर देवपुरूषों की सहभागिनी मात्र हैं। अर्थात पुरूष-पक्ष द्धारा मिथ्या नारी-सम्मान का दम्भ अवश्य भरा गया है, पर उन्हें रंच मात्र भी अपने समकक्ष खड़ा नहीं होने दिया है। परतंत्र भारत में नारी कभी भी स्वतंत्रता का न तो अनुभव कर सकी और न ही उसको प्राप्त कर सकी।

नारी स्वातंष्य की दृष्टि से स्वतंत्र भारत का इतिहास उल्लेखनीय है। क्योंकि तब भारत में एक संवैधानिक व्यवस्था लागू हो चुकी थी। भारतीय संविधान ने प्रत्येक नागरिक को मौलिक अधिकार प्रदान कर उसकी गरिमा को सुनिश्चित किया है, जो सनातन काल (सैंधव काल पश्चात) से सन् 1947 ई0 तक अवर्ण समाज और नारी समाज को कदापि प्राप्त नहीं हुई थी। आर्य साहित्य में यूँ तो अपाला, घोषा, विश्ववारा आदि कुछ विदुषी महिलाओं को अंगुलियों में गिना जा सकता है, लेकिन उनका अनुकरण या अनुशासन समाज में माना गया हो, ऐसा कहीं भी प्रतीत नहीं होता है। राजनीतिक इतिहास में भी हम रानी दिद्दा, रजिया सुल्ताना, नूरजहाँ, दुर्गावती, अवन्तीबाई, लक्ष्मीबाई जैसे कुछ नामों को गिनाकर महिला शक्ति को संतोष भले ही दिला देते हैं, लेकिन उनका प्रभाव सीमित और अनुकरण नगण्य ही रहा है। भारत ऋणी है उस प्रथम शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का, जिसने ब्राम्हणसमाज, पुरूष-समाज और स्वयं नारी समाज से अपमान और अत्याचार सहे हैं, सिर्फ इसलिए कि भारतीय महिला समाज वैदिक काल से ब्रिटिश काल तक झेली गई यातना से कुछ तो मुक्त हो सके। यदि वर्तमान का नारी-समाज बुद्धि, धन, सत्ता, संस्कृति, शिक्षा और सम्मान से सिर ऊँचा कर पा रहा है तो सिर्फ सावित्रीबाई फुले की शिक्षा और डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्धारा संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों के कारण। यह संविधान की ही देन है कि आज भारतीय नारियाँ-राष्ट्रपति, राज्यपाल, प्रधानमंत्री, मंत्री, सांसद,

विधायक, अध्यक्ष, सरपंच आदि राजनीतिक पदों को सुशोभित कर अपनी राजनीतिक कुशलता का परिचय दे रही हैं। आर्थिक क्षेत्र में वे भिन्न-भिन्न औद्योगिक प्रतिष्ठानों की मुखिया बन रही हैं, बैंकर बन रही हैं। एक तरफ विज्ञान के क्षेत्र में झण्डे गाड़ रही हैं, वहीं दूसरी तरफ खेल की समस्त विधाओं में न केवल उपस्थिति दर्ज कराती हैं, बल्कि पुरूषों की बराबरी करती नजर आती हैं। गर्व होता है कि परतंत्र काल तक नारी-शिक्षा की स्थिति शून्य सी थी, लेकिन आज इक्कीसवीं सदी में शैक्षणिक परिवर्तन समृद्ध अंकों में आँका जा सकता है। समृद्धि का ऐसा कोई भी कोना अछूता नहीं है, जहाँ पर नारी-समुदाय ने सफलता के परचम न फहराये हों। कल्पना कीजिए कि लगभग तीन सहस्राब्दियों से तिरस्कृत, अधिकार-वंचिता भारतीय नारी सिर्फ स्वतंत्रता के 70 वर्ष पश्चात् कितनी सशक्त और प्रतिभा सम्पन्न हो चुकी है। सिवाय इसके अन्यथा विचार नहीं है कि भारत का स्वतंत्र घोषित होना और राज्य संचालन हेतु लोकतांत्रिक व्यवस्था को स्वीकार करना ही नारी मुक्ति का सबसे बड़ा उपादान है।

निरपेक्ष विश्लेषण से यह तो सिद्ध होता है कि नारी समाज में वैदिक काल से ब्रिटिश काल तक की अपेक्षा स्वातंत्र्यकाल से समसामयिक काल तक अभूतपूर्व परिवर्तन आये हैं, लेकिन वह स्थिति अभी भी अप्राप्त है जो पुरूष समाज को हजारों साल पूर्व से प्राप्त है। आज भी भारतीय नारी संचार की दुनिया, विज्ञान की दुनिया, शिक्षा और राजनीति की दुनिया से परिचित है और संलग्न भी हैं, लेकिन वह सनातनधर्मी संस्कृति, धर्म, आचरण, छद्म् नैतिकता से पीछा नहीं छुड़ा पाई है। वह आज भी पीर-फकीर, बाबा-बैरागी के आडम्बर-जाल में उलझी है, वह आज भी पुत्र-पुत्री में सामाजिक अन्तर जानती हैं, वह आज भी पति को परमेश्वर मानती हैं, वह आज भी उन धार्मिक, साहित्यिक, पौराणिक, आख्यानों को छाती से चिपकाए है जो उसे अधिकार वंचिता बनाने में पूर्ण सक्षम हैं, वह आज भी स्वयं से जनित पुरूष संतति से डरती है, वह आज भी भेदक सनातनी मूल्यों को छोड़ने से डरती है, वह आज भी अँग्रेजी लिबास ओढ़कर संकीर्ण विचारधारा से ग्रसित है, वह आज भी पुरूष की अनुचरी बनने में गर्व महसूस करती है, वह अज भी पुरूष के मिथ्या प्रेम-प्रदर्शन को नैसर्गिक सच मान बैठी है और वह आज भी भारतीय राजनीति का खिलौना बनी हुई है। उसमें उस क़दर से शक्ति और परिवर्तन नहीं दिखता जिससे वह अपनी वास्तविक स्थिति को प्रदर्शित कर सके। उसमें वह जज्बा नहीं दिखता कि प्रत्येक संवैधानिक संस्थाओं में वह अपनी बराबर की हिस्सेदारी सुनिश्चित कर सके और जब तक भारत की समस्त शासकीय-अशासकीय, संवैधानिक और कानूनी (न्यायिक) संस्थाओं में वह बराबर की हिस्सेदारी नहीं पा लेती हैं; तब तक यह मानना पड़ेगा कि भारतीय नारी व्यामोह में है, वह वास्तविक अंश में से अल्पांश में ही संतुष्ट है, वह लोकतंत्रात्मक मूल्यों की अपेक्षा पुरातनकाल से जेहन में बैठाये विनाशकारी मूल्यों को सँभालने में ज्यादा रूचिबद्ध है। लिहाजा भारतीय महिला समाज पीढ़ी-दर-पीढ़ी भौतिक प्रगति कर रहा है, बैद्धिक प्रगति कर रहा है; लेकिन वह मानसिक और तार्किक प्रगति में पुरूषसमाज से पीछे है। उम्मीद यह है कि आगामी कुछेक दशकों में भारत में वह सामाजिक व्यवस्था फलीभूत होगी, जिसमें लिंगीय असमानता मात्र प्राकृतिक रह जायेगी, शेष सभी प्रगति और सम्मान के आयामों में नारी-पुरूष में अन्तर शून्य हो जायेगा, और तब भारत वास्तव में एक सच्चा लोकतंत्र साबित होगा।

❖ ❖ ❖

पाक्सो एक्ट (POCSO ACT)

डॉ. भावना यादव
सहा. प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शास. स्वशासी कन्या
स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

1950 में लागू भारतीय संविधान में समय के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नये नियमों और कानूनों को आवश्यकतानुसार शामिल किया गया। इन्हीं नियम और कानूनों में से एक है पॉक्सो एक्ट जो किशोरों के लिए एक अलग कानून के रूप में अपना विशेष स्थान रखता है।

भारतीय समाज में विकास के साथ-साथ आई विकृतियों के कारण दिनों-दिन अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है। ये अपराध केवल चोरी-डकैती, लूट-पाट, हिंसा तक सीमित न रहकर छोटे बच्चों तक फैल गये हैं। हम आज आए दिन बच्चों के साथ होने वाले यौन अपराधों की खबरें समाचार पत्रों और मीडिया में देखते हैं। इस तरह के बढ़ते मामलों पर अंकुश लगाने हेतु सरकार ने सन् 2012 में एक विशेष कानून बनाया, जो बच्चों को छेड़खानी, बलात्कार और कुकर्म जैसे मामलों से सुरक्षा प्रदान करता है।

'पॉक्सो' अँग्रेजी का शब्द है जिसका अर्थ है - 'प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल अफेंसेस।'' पॉक्सो एक्ट 2012 अर्थात् लैंगिक उत्पीड़न से बच्चों के संरक्षण और सुरक्षा का कानून। यह एक्ट नाबालिग बच्चों के साथ होने वाले यौन अपराध, छेड़छाड़ के मामलों, सेक्सुअल हैरेसमेंट, सेक्सुअल असॉल्ट और पोर्नोग्राफी जैसे गंभीर अपराधों से सुरक्षा देता है। इस कानून में अलग-अलग अपराधों के लिए अलग-अलग सजा निर्धारित की गई है। जिसका कड़ाई से पालन किया जाना भी सुनिश्चित किया गया है। इस एक्ट के तहत अपराध सिद्ध होने पर सात साल की सजा, उम्र कैद और अर्थदंड का प्रावधान किया गया है।

इस कानून की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह कानून नाबालिग लड़के और लड़की दोनों को समान रूप से सुरक्षा प्रदान करता है। साथ ही इस कानून के तहत पंजीकृत होने वाले मामलों की सुनवाई विशेष अदालत में की जाती है।

वर्ष 2018 में पॉक्सो एक्ट को कठोर करने हेतु इसमें संशोधन करते हुए यह निर्धारित किया गया कि 12 साल तक की बच्ची से दुष्कर्म सिद्ध होने पर दोषियों को मौत की सजा देने का प्रावधान किया गया। जिससे अपराधियों में भय पैदा होगा। साथ ही इस अधिनियम में इस बात का भी ध्यान रखा गया कि न्यायिक व्यवस्था के द्वारा फिर से बच्चे पर किसी भी प्रकार का दबाब न बनाया जाए। अत: केस की सुनवाई एक विशेष अदालत द्वारा बंद कमरे में कैमरे के सामने दोस्ताना माहौल में किये जाने का प्रावधान है। जिसमें बच्चे की पहचान गुप्त रखने का प्रयास होता है। साथ ही इस अधि ानियम में यह भी कहा गया है कि बच्चे/बच्ची के यौन शोषण का मामला घटना घटने की तारीख से एक वर्ष के अन्दर निपटाया जाना चाहिये, साथ ही इस ऐक्ट ने यौन अपराध में रिपोर्ट करना अनिवार्य कर दिया है। यानि अगर आपको किसी बच्चे के साथ होने वाले यौन अपराध की जानकारी है तो ये आपकी कानूनी जिम्मेदारी है कि आप इसे रिपोर्ट करें। यदि ऐसा नहीं किया तो आपको 6 माह की जेल और जुर्माना हो सकता है।

इस प्रकार सरकार ने बाल अपराधों को रोकने के लिए कड़े दंड सहित इस अधिनियम को बनाया है ताकि बाल यौन उत्पीड़न को रोका जा सके। आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी अपने चारों और संवेदनशीलता से देखें और अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें, क्योंकि किसी भी नाबालिग के साथ होने वाला दुराचार उस सारे परिवार और समाज को प्रभावित करता है। ऐसे में हमारी सजगता ही हमारा दायित्व होगी जो अपराध को रोंकने और अपराधी को दंड दिलाने में सहयोगी होगी तभी अपराधियों को भय होगा और सम्भवत: नाबालिगों पर होने वाले अत्याचारों को रोका जा सकेगा।

❖ ❖ ❖

भारत में ई-कामर्स का व्यवसाय कार्य तेजी से विकसित हो रहा है विशेषकर युवा वर्ग में आजकल ऑनलाईन रेडीमेड कपड़े, मोबाईल फोन, घड़ियाँ, सौन्दर्य प्रसाधन, जूते तथा अन्य सामान की खरीदी काफी लोकप्रिय है। भारत में यह व्यवसाय 51 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है जो बाकी देशों से बहुत तेज है। सरकार भी इस दिशा में प्रयास कर रही है, ज्यादा व्यापार ई-कामर्स के माध्यम से हो ताकि कर की चोरी को रोका जा सकेगा तथा डिजीटल पेमेन्ट को बढ़ावा मिले।

स्त्रोत :-

1. www. wtechui. com
2. www. itkhoj.com
3. www.statista.com
4. www. wikipedia.
5. दैनिक भास्कर समाचार पत्र
6. E.Commerce Journey
7. dr.nerendrasingh@gmail.com

❖ ❖ ❖

एक लड़की सहमी सी

एक लड़की
मैं लड़की हूँ सहमी सी
डरती हूँ।
रोती हूँ
मैं लड़की हूँ सहमी सी।

कोई तो हो जो
समझे मुझे
मैं रोती हूँ मन ही मन
मैं लड़की हूँ सहमी सी

न अपनो से बोल पाऊँ।
न दूसरों से
मैं लड़की हूँ सहमी सी

मुझे मत इतना करो परेशान
की मैं मुस्करा न सकूँ
मैं लड़की हूँ सहमी सी

मैं दिन को कोसती हूँ।
जब मैं इस दुनिया में आई
मैं अकेली हूँ सहमी सी
मैं लड़की हूँ सहमी सी।
न अपनो का साथ
न परायों का
मैं अकेली हूँ।
मैं लड़की हूँ सहमी सी।

मुझे जकड़ती है।
वो बातें तो
यादे जिन्हें
न बोल पाउँ
मैं अकेली हूँ सहमी सी।

मैं वो दिन रोज ढूंढती हूँ।
जब मैं हंस पाऊँगी
इस दुनियां में
मैं लड़की हूँ सहमी सी।

कोई नहीं अरमान था मेरा
बस केवल अभिलाषा थी।
वक्त ने मुझे मार दिया
मैं लड़की हूँ सहमी सी।

मैं अकेली हूँ सहमी हूँ
जीने दो मुझे जीने दो।

– हर्षा सोनी

❖ ❖ ❖